CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. स्वार्थ का ज़हर
जब तक आवृत रखेगा
मानवता की आकृति को
और
स्वार्थ की नींव जब तक
जुड़ी रहेगी धन के गारे से
तब तक
आत्मसंतोष केवल
कल्पना की वस्तु होगी ।
कितने ही त्याग और
धर्म के उपदेश करें
अभावों की यह रात
सूनी-सी अन्धी रहेगी
सोचने से कार्य नहीं हो जाता
कल्पना से यथार्थ मेल नहीं खाता
आदर्श और धर्म को
काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या,
उत्तरदायित्व और संवेदनाहीन
इन थोथी डिग्रियों से
जीवन के दुख का रहस्य
सुलझ नहीं पाता ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

1(क). किन स्थितियों में आत्मसंतोष कल्पना की वस्तु होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में स्वार्थ को मानवता को ढकने वाला ज़हर कहा गया है। आत्मसंतोष का संबंध मानवीय आचरण से है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: स्वार्थ और धन का संबंध देखें जब स्वार्थ मानवता को ढक लेता है और उसकी नींव धन के गारे से जुड़ी रहती है, तब मनुष्य दूसरों के दुख के प्रति उदासीन रहता है।

चरण 2: कवि का निष्कर्ष समझें ऐसी स्थिति में वास्तविक आत्मसंतोष नहीं मिलता; वह केवल मन की कल्पना बना रहता है। धन से जुड़ा स्वार्थ मानवता को दबा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष मानवता पर स्वार्थ का आवरण होने और स्वार्थ का आधार धन बने रहने तक आत्मसंतोष केवल कल्पना की वस्तु होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

1(ख). 'अभावों की रातें' से कवि को क्या अभिप्रेत है ? यह रात और अधिक 'सूनी' और 'अंधी' कैसे हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में रात जीवन के अभावों और निराशा का प्रतीक है। सूनेपन और अंधेपन का अर्थ इसी संदर्भ में समझना है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: रात का आशय पहचानें अभावों की रात से कवि का अभिप्राय दुख, निर्धनता और आवश्यक सुविधाओं की कमी से भरे जीवन से है।

चरण 2: सूनेपन और अंधेपन का कारण बताएँ केवल त्याग और धर्म के उपदेश दिए जाएँ, किंतु अभाव दूर करने के लिए ठोस कार्य न हो, तो दुखी जीवन में न सहारा मिलता है, न आशा की रोशनी आती है।

चरण 3: निष्कर्ष अभावों की रात दुख और वंचना का जीवन है। व्यावहारिक सहायता के स्थान पर केवल उपदेश मिलने से यह और सूनी तथा अंधी हो जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

1(ग). आशय स्पष्ट कीजिए :

'आदर्श और धर्म को

काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या ?' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इन पंक्तियों में कवि लिखित आदर्शों और वास्तविक कर्म के बीच के अंतर पर प्रश्न उठाता है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: शब्दों तक सीमित आदर्श समझें आदर्श और धर्म की बातें काग़ज़ पर लिख देना पर्याप्त नहीं है। इससे मनुष्य की वास्तविक समस्याएँ अपने आप दूर नहीं होतीं।

चरण 2: व्यावहारिक संदेश स्पष्ट करें कवि चाहता है कि आदर्श आचरण में उतरें। संवेदना और उत्तरदायित्व से प्रेरित काम ही दुख और अभाव को दूर कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्तियों का आशय है कि धर्म और आदर्श तभी सार्थक हैं जब उन्हें जीवन में अपनाकर दुखियों की सहायता की जाए; केवल लिखने से लाभ नहीं होता।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

1(घ). 'डिग्रियाँ' क्या हैं ? उन्हें थोथी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि डिग्रियों का मूल्य मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व की कसौटी पर परखता है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: डिग्रियों का अर्थ बताएँ डिग्रियाँ शिक्षण संस्थाओं से प्राप्त शैक्षिक उपाधियाँ अथवा योग्यता के प्रमाणपत्र हैं।

चरण 2: उन्हें थोथी कहने का कारण समझें जब इन उपाधियों के साथ संवेदना और उत्तरदायित्व नहीं होता, तब वे जीवन के दुख को समझने और मिटाने में सहायक नहीं बनतीं। ऐसी शिक्षा केवल बाहरी प्रमाण रह जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष डिग्रियाँ शैक्षिक उपाधियाँ हैं। संवेदना और उत्तरदायित्व से रहित होकर जीवन के दुख दूर न कर पाने के कारण कवि ने उन्हें थोथी कहा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

1(ङ). 'जीवन के दुख का रहस्य' कैसे सुलझ पाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश विचार, कल्पना और उपदेश की सीमा बताकर संवेदनापूर्ण कर्म का महत्त्व सामने रखता है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: निष्फल साधनों को पहचानें केवल सोचने, कल्पना करने, आदर्श लिखने या उपाधियाँ प्राप्त करने से जीवन के दुख का रहस्य नहीं सुलझता।

चरण 2: सार्थक उपाय बताएँ मनुष्य को दूसरों की पीड़ा समझकर अपने उत्तरदायित्व का पालन करना चाहिए। स्वार्थ छोड़कर अभाव दूर करने के लिए वास्तविक प्रयास करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के दुख का रहस्य संवेदना, उत्तरदायित्व और आदर्शों को व्यवहार में उतारने वाले कर्म से सुलझ पाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2. जिस समय लोकमान्य तिलक ने राजनीतिक क्षेत्र में क़दम रखा उस समय पूरा देश चैतन्यहीन और स्वत्वहीन हो चुका था । देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे । उनमें जीवन नहीं था, एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था । उनके मन में यह भरा जा चुका था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य इस देश पर सदा शासन करने वाला है ।

इस परिस्थिति को बदलने की आवश्यकता तिलक ने महसूस की । उन्होंने उन्हीं असंगठित पत्तों जैसे लोगों को इकट्ठा किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया । देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था । इस दृष्टि को बदलकर उन्हें जीवनोन्मुख बनाया । इस कार्य के लिए उन्होंने भगवद् गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ ।

तब हालत कुछ ऐसी थी कि अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में ही हमारे पढ़े-लिखे विचारक गौरव महसूस करते थे । भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज, समाज-व्यवस्था – सभी उनकी दृष्टि में हेय थी । तिलक ने इस बात को समझा और अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया । इसी के साथ उन्होंने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न हुए विरोधों को दूर कर राष्ट्रीयता की भावना को पैदा किया और राष्ट्रीयता की भावना से ही पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ जिसका प्रेरक वाक्य था – "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।"

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

2(क). 'चैतन्यहीन होने' से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए कि देश की चैतन्यहीनता का क्या कारण था । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में चैतन्यहीनता राष्ट्रीय चेतना, आत्मविश्वास और सक्रियता के अभाव का संकेत है। इसका अर्थ शारीरिक बेहोशी नहीं है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: चैतन्यहीनता का अर्थ स्पष्ट करें चैतन्यहीन होने का तात्पर्य जागरूकता, उत्साह और स्वतंत्र अस्तित्व की चेतना का लुप्त हो जाना है। देशवासी असंगठित थे और उनका आत्मविश्वास नष्ट हो गया था। उन्हें अपनी सामूहिक शक्ति का बोध नहीं रह गया था।

चरण 2: गद्यांश से कारण जोड़ें लोगों के मन में यह विश्वास भर दिया गया था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य भारत पर सदा शासन करेगा। इसी निराशाजनक धारणा ने उनमें स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने का उत्साह दबा दिया। एकता तथा आत्मविश्वास के अभाव ने इस निष्क्रिय दशा को और गहरा किया।

चरण 3: निष्कर्ष चैतन्यहीनता राष्ट्रीय जागरूकता और आत्मविश्वास का अभाव है। अंग्रेज़ी शासन को स्थायी मान लेने तथा एकता न रहने से देश इस दशा में पहुँच गया था।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2(ख). देशवासियों की तुलना सूखे पत्तों से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा समझने के लिए देशवासियों और जंगल के सूखे पत्तों के साझा गुणों को गद्यांश से चुनना है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: उपमान के गुण समझें जंगल के सूखे पत्ते बिखरे होते हैं, परस्पर जुड़े नहीं होते और उनमें जीवन की हरियाली नहीं रहती। वे संगठित शक्ति का रूप नहीं ले पाते। यह चित्र गद्यांश में लोगों की तत्कालीन दशा को स्पष्ट करता है। तिलक के संगठन कार्य से पहले लोग इसी प्रकार दिशाहीन और परस्पर कटे हुए थे।

चरण 2: देशवासियों से समानता स्थापित करें देशवासी भी अस्त-व्यस्त और असंगठित थे। उनमें एकता, उत्साह और आत्मविश्वास का अभाव था। अंग्रेज़ी शासन को सदा बना रहने वाला मानकर वे निराश और निष्क्रिय हो गए थे। लेखक का आशय उनकी राष्ट्रीय चेतना की कमी से है, उनके वास्तविक जीवन के अंत से नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सूखे पत्तों की तरह देशवासी बिखरे, असंगठित तथा उत्साहहीन थे। एकता और आत्मविश्वास के अभाव के कारण उनकी तुलना सूखे पत्तों से की गई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2(ग). 'उस परिस्थिति' में तिलक ने कौन-सा महत्त्वपूर्ण कार्य किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में उस परिस्थिति से आशय देशवासियों की असंगठित, निराश और आत्मविश्वासहीन दशा से है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: तत्कालीन स्थिति पहचानें देशवासियों को विश्वास हो गया था कि अंग्रेज़ सदा शासन करेंगे। लोग बिखरे हुए थे और उनमें राष्ट्रीय एकता का अभाव था।

चरण 2: तिलक का कार्य बताएँ तिलक ने उन्हीं असंगठित लोगों को एकत्र किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया। इससे लोगों को साझा उद्देश्य और सक्रिय होने की प्रेरणा मिली।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने असंगठित देशवासियों को संगठित किया और उनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने का संकल्प जगाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2(घ). देश के पढ़े-लिखे विचारकों की क्या सोच थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश शिक्षित विचारकों की अपने समाज के प्रति हीन दृष्टि और पाश्चात्य समाज के प्रति प्रशंसा की प्रवृत्ति बताता है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: अपने समाज के प्रति सोच बताएँ पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाने में गौरव महसूस करते थे। भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था उन्हें हेय लगती थी। वे अपने समाज की विशेषताओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते थे।

चरण 2: पाश्चात्य समाज के प्रति सोच बताएँ वे पाश्चात्य समाज, उसके जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करते थे। इस प्रकार उनकी सोच में अपने समाज की निंदा तथा पश्चिम की प्रशंसा प्रमुख थी। गद्यांश में तिलक द्वारा लोगों में अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाने की आवश्यकता इसी पृष्ठभूमि में सामने आती है।

चरण 3: निष्कर्ष पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज में दोष देखते और उसकी परंपराओं को हीन मानते थे, जबकि पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार तथा कृतित्व की प्रशंसा में गौरव अनुभव करते थे।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2(ङ). तिलक ने किस आधार पर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में परलोकमुखी दृष्टि को जीवनोन्मुख बनाने का आधार भगवद् गीता की नई व्याख्या बताया गया है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के शब्दों और उसके प्रसंग को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: पुरानी दृष्टि पहचानें देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता और इस लोक के प्रति उदासीन रहता था। इससे जीवन में सक्रिय कर्म की प्रेरणा कमज़ोर पड़ती थी।

चरण 2: परिवर्तन का आधार बताएँ तिलक ने भगवद् गीता को नया अर्थ देकर कर्मयोग का सिद्धांत सामने रखा। इससे लोगों को जीवनोन्मुख होने और राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में सक्रिय होने की प्रेरणा मिली।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने भगवद् गीता की नई व्याख्या और कर्मयोग के सिद्धांत के आधार पर लोगों को जीवनोन्मुख बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय प्रश्न के प्रमुख शब्द को अंश की संबंधित पंक्ति से जोड़ें और उसी भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

2(च). तिलक ने देशवासियों में अपने समाज और धर्म के प्रति अभिमान जगाना आवश्यक क्यों समझा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य-बोध के प्रश्न में कारण उसी अनुच्छेद से चुनना चाहिए जिसमें तिलक के कार्य की पृष्ठभूमि दी गई है।
- यहाँ अपने समाज को हीन समझने की प्रवृत्ति और उसे बदलने की आवश्यकता का संबंध स्पष्ट करना है।

चरण 1: तत्कालीन दृष्टिकोण पहचानना पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाते थे और पाश्चात्य समाज, जीवन तथा विचारों की प्रशंसा करते थे। वे भारतीय धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था को हेय समझते थे।

चरण 2: अभिमान जगाने का कारण इस सोच से देशवासियों में अपने समाज के प्रति हीनभावना बढ़ रही थी। तिलक ने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाना आवश्यक समझा ताकि लोग इस हीनभावना से निकलकर आत्मगौरव तथा राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित हों।

चरण 3: निष्कर्ष अपने समाज और धर्म के प्रति फैली हीनभावना दूर करने तथा देशवासियों में आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए तिलक ने ऐसा करना आवश्यक समझा।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाश्चात्य गुणगान और भारतीय समाज को हेय मानने की प्रवृत्ति को जोड़कर उत्तर लिखिए।

2(छ). सामाजिक सौहार्द के लिए तिलक का क्या योगदान था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक सौहार्द का आशय समाज के विभिन्न गुटों के बीच विरोध घटाकर सहयोग और एकता स्थापित करना है।
- उत्तर में गद्यांश में बताए गए कार्य और उसके सामाजिक परिणाम का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: गद्यांश का आधार गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि तिलक ने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न विरोधों को दूर किया। इसलिए उत्तर का केंद्र किसी नए आयोजन का वर्णन नहीं, बल्कि पारस्परिक विरोध मिटाना है।

चरण 2: योगदान स्पष्ट करना उन्होंने लोगों में अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाया तथा बँटे हुए गुटों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा की। इससे उनके बीच एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा मिला।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने समाज के विभिन्न गुटों के विरोध दूर करके उनमें राष्ट्रीयता और एकता की भावना जगाई; यही सामाजिक सौहार्द के लिए उनका योगदान था।

त्वरित सुझाव: सौहार्द का उत्तर लिखते समय दो बातें साथ रखें: गुटों के विरोध दूर करना और राष्ट्रीय एकता जगाना।

2(ज). तिलक की राष्ट्रीयता की भावना किस रूप में प्रतिफलित हुई ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिफलित होने का अर्थ है किसी भावना का ठोस परिणाम या अभिव्यक्ति सामने आना।
- इस प्रश्न में राष्ट्रीय चेतना से निकली राजनीतिक माँग और उसके प्रेरक वाक्य को पहचानना है।

चरण 1: राष्ट्रीयता की पृष्ठभूमि तिलक ने असंगठित देशवासियों को एकत्र किया, उनमें स्वातंत्र्य का संकल्प जगाया और सामाजिक गुटों के विरोध दूर किए। उन्होंने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाकर लोगों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा की। गद्यांश में यह राष्ट्रीय एकता आगे की माँग का आधार बनी है।

चरण 2: परिणाम और प्रेरक वाक्य गद्यांश के अंतिम अंश के अनुसार राष्ट्रीयता की भावना से पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ। इसका प्रेरक वाक्य था—"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार राष्ट्रीयता केवल मन की भावना तक सीमित नहीं रही, बल्कि अपने देश की स्वतंत्रता के अधिकार की सामूहिक माँग में व्यक्त हुई। यहाँ उत्तर में पूर्ण स्वराज्य और जन्मसिद्ध अधिकार, दोनों बातों को स्थान देना उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक की राष्ट्रीयता की भावना पूर्ण स्वराज्य की माँग के रूप में प्रतिफलित हुई। उसका प्रेरक उद्घोष था—"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

त्वरित सुझाव: प्रतिफल पूछे जाने पर तिलक के सभी कार्य गिनाने के बजाय अंतिम अनुच्छेद की पूर्ण स्वराज्य की माँग लिखिए।

2(झ). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक संक्षिप्त होता है और गद्यांश की केंद्रीय भावना को समेटता है।
- इस गद्यांश में लोकमान्य तिलक द्वारा आत्मविश्वास, कर्मशीलता, राष्ट्रीयता और स्वराज्य की चेतना जगाने का वर्णन है।

चरण 1: मुख्य कथ्य देखना गद्यांश पहले देशवासियों की निष्क्रियता और हीनभावना बताता है। फिर तिलक द्वारा संगठन, कर्मयोग, आत्मगौरव तथा सामाजिक एकता के माध्यम से इस परिस्थिति को बदलने का वर्णन करता है।

चरण 2: शीर्षक का चयन तिलक का यह योगदान पूरे गद्यांश को जोड़ता है। केवल गीता या पाश्चात्य समाज पर आधारित शीर्षक एक अंश तक सीमित होगा। राष्ट्रीय जागरण का उल्लेख करने वाला शीर्षक आरंभ की चेतनाहीनता से अंत की स्वराज्य की माँग तक पूरे आशय को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—"लोकमान्य तिलक और राष्ट्रीय जागरण।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में मुख्य व्यक्तित्व और उसके केंद्रीय योगदान को रखिए; किसी एक उदाहरण को पूरे गद्यांश का विषय न बनाइए।

2(ञ). उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए :

संकल्प, स्वातंत्र्य । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द से पहले और प्रत्यय मूल शब्द के बाद जुड़ता है।
- शब्द-विभाजन में ध्वनि या स्वर के परिवर्तन को ध्यान में रखकर मूल रूप बताना चाहिए।

चरण 1: संकल्प का विभाजन संकल्प में उपसर्ग "सम् और मूल शब्द "कल्प है। सम् के म् का अनुस्वार रूप होने से शब्द "संकल्प बनता है। अत: सं को अलग स्वतंत्र मूल उपसर्ग मानने के बजाय उसका मूल रूप सम् लिखना उचित है।

चरण 2: स्वातंत्र्य का विभाजन स्वातंत्र्य में मूल शब्द "स्वतंत्र और भाववाचक प्रत्यय "य है। प्रत्यय जुड़ने पर आरंभिक स्वर में वृद्धि होकर स्वातंत्र्य रूप बनता है। इसका अर्थ स्वतंत्र होने की अवस्था है। केवल अंतिम अक्षर देखकर त्र्य को प्रत्यय कहना सही नहीं होगा।

चरण 3: निष्कर्ष संकल्प = सम् (उपसर्ग) + कल्प। स्वातंत्र्य = स्वतंत्र + य (प्रत्यय)।

त्वरित सुझाव: संकल्प में अनुस्वार से उपसर्ग का मूल रूप सम् पहचानिए और स्वातंत्र्य में स्वर-वृद्धि के साथ य प्रत्यय अलग कीजिए।

2(ट). मिश्रवाक्य में बदलिए :

'देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्रवाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण करते समय देशवासियों की अस्त-व्यस्तता की तुलना सूखे पत्तों से बनी रहनी चाहिए।

चरण 1: तुलना को उपवाक्य में बदलना मूल वाक्य में "जंगल के सूखे पत्तों की तरह केवल पदबंध है। उसे "जैसे जंगल के सूखे पत्ते अस्त-व्यस्त होते हैं बनाकर क्रियायुक्त आश्रित उपवाक्य बनाया जा सकता है।

चरण 2: प्रधान उपवाक्य जोड़ना इसके साथ "वैसे ही देश के करोड़ों निवासी अस्त-व्यस्त थे प्रधान उपवाक्य रखें। जैसे–वैसे ही का संबंध दोनों अंशों को जोड़ता है और मूल तुलना भी बची रहती है। देशवासियों के लिए मूल भूतकाल "थे यथावत रखा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्रवाक्य: "जैसे जंगल के सूखे पत्ते अस्त-व्यस्त होते हैं, वैसे ही देश के करोड़ों निवासी अस्त-व्यस्त थे।

त्वरित सुझाव: मिश्रवाक्य बनाने के लिए तरह वाले पदबंध को जैसे वाले क्रियायुक्त उपवाक्य में बदलिए और तुलना का अर्थ सुरक्षित रखिए।

3(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

साम्प्रदायिक एकता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- साम्प्रदायिक एकता का आधार विभिन्न धर्मों के लोगों का परस्पर सम्मान, समान नागरिकता और सहयोग है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक के बाद पहले भारत की धार्मिक विविधता का परिचय दें। फिर साम्प्रदायिक एकता का अर्थ और आवश्यकता समझाएँ। इसके बाद वैमनस्य के कारण, उसके दुष्परिणाम तथा एकता बढ़ाने के व्यावहारिक उपाय लिखें। अंत में नागरिक दायित्व पर बल दें। विषय में शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए विचारों को स्पष्ट और संगठित अनुच्छेदों में प्रस्तुत करना उचित है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध साम्प्रदायिक एकता

भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का देश है। यहाँ मंदिर की घंटियों, मस्जिद की अजान, गुरुद्वारे की वाणी और गिरजाघर की प्रार्थना के बीच जीवन आगे बढ़ता है। यह विविधता हमारी सांस्कृतिक संपदा है। इसे सुरक्षित रखने का आधार साम्प्रदायिक एकता है।

साम्प्रदायिक एकता का अर्थ अपना धर्म छोड़ना नहीं है। इसका अर्थ है अपने विश्वास का पालन करते हुए दूसरे के विश्वास और अधिकारों का सम्मान करना। सभी नागरिकों के सुख-दुख, सुरक्षा और सम्मान को समान महत्त्व देना ही सच्चे भाईचारे की पहचान है। साथ पढ़ने, काम करने और एक-दूसरे की सहायता करने से यह भावना मजबूत होती है।

राष्ट्र की प्रगति के लिए शांति और विश्वास आवश्यक हैं। जब लोग धार्मिक पहचान के कारण एक-दूसरे से डरने लगते हैं, तब समाज का सहयोग टूटता है। हिंसा में निर्दोष लोग मारे जाते हैं, परिवार उजड़ते हैं और व्यापार तथा शिक्षा बाधित होते हैं। घृणा की कीमत पूरे देश को चुकानी पड़ती है।

कट्टरता, अज्ञान, अफवाह और स्वार्थपूर्ण राजनीति इस एकता को चोट पहुँचाते हैं। किसी एक व्यक्ति के अपराध के लिए पूरे समुदाय को दोष देना अन्याय है। बिना जाँच के भड़काऊ संदेश फैलाना भी तनाव बढ़ाता है। हमें सूचना की सत्यता परखनी चाहिए और उत्तेजक बातों का विरोध करना चाहिए।

परिवार और विद्यालय बच्चों में समानता तथा सहिष्णुता के संस्कार विकसित कर सकते हैं। विभिन्न समुदायों के लोग मिलकर त्योहार मनाएँ, संवाद करें और सार्वजनिक सेवा में सहयोग दें। प्रशासन निष्पक्ष रहे तथा कानून सभी पर समान रूप से लागू हो। संकट के समय धर्म पूछे बिना सहायता करना एकता का सबसे प्रभावी उदाहरण है।

हमारी साझा पहचान भारतीय नागरिक की है। अपने धर्म से प्रेम और दूसरे धर्म के प्रति सम्मान साथ-साथ चल सकते हैं। साम्प्रदायिक एकता तभी स्थायी होगी जब हम इसे केवल नारे में नहीं, अपने दैनिक व्यवहार में अपनाएँगे।

चरण 3: निष्कर्ष साम्प्रदायिक एकता विविध धार्मिक विश्वासों के बीच सम्मान और सहयोग का संबंध है। निष्पक्ष व्यवहार, संवाद और साझा नागरिक दायित्व से ही इसे मजबूत किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: निबंध में विविधता की भूमिका के बाद एकता का अर्थ, बाधाएँ, व्यावहारिक उपाय और नागरिक संकल्प क्रम से लिखिए।

3(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

बढ़ती आबादी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवेचन, सुसंगत अनुच्छेद और विचारपूर्ण उपसंहार आवश्यक हैं।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें और मुख्य भाग में कारण, प्रभाव तथा उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपना विचार स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करें जनसंख्या-वृद्धि का अर्थ और उसके सामाजिक प्रभाव स्पष्ट करें। फिर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और पर्यावरण पर पड़ने वाले दबाव का विवेचन करके व्यावहारिक उपाय सुझाएँ। समस्या को केवल लोगों की संख्या से न जोड़ें; उपलब्ध संसाधनों और अवसरों के असमान वितरण का भी ध्यान रखें। निबंध के ऊपर सार्थक शीर्षक रखें। उसके बाद प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार को अलग अनुच्छेदों में लिखें। भाषा सरल, शुद्ध और विषयानुकूल रहे।

चरण 2: पूरा आदर्श निबंध लिखें बढ़ती आबादी

मानव किसी देश की सबसे बड़ी संपदा है, किंतु जब जनसंख्या की वृद्धि के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अन्य सुविधाओं का विस्तार नहीं हो पाता, तब यही संपदा गंभीर चुनौती बन जाती है। बढ़ती आबादी का प्रश्न केवल संख्या का प्रश्न नहीं, प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्ण जीवन उपलब्ध कराने का प्रश्न भी है।

जनसंख्या-वृद्धि के पीछे अशिक्षा, कम आयु में विवाह, पुत्र की इच्छा और परिवार-नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव जैसे कारण काम करते हैं। चिकित्सा सुविधाओं में सुधार से मृत्यु-दर घटती है, लेकिन जन्म-दर उसी अनुपात में न घटे तो आबादी तेजी से बढ़ती है। सामाजिक परंपराएँ और महिलाओं की निर्णय लेने में सीमित भागीदारी भी परिवार के आकार को प्रभावित करती हैं।

इसके परिणाम जीवन के अनेक क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। विद्यालयों में भीड़, अस्पतालों में लंबी कतारें और रोजगार के सीमित अवसर जनसुविधाओं पर बढ़ते दबाव के संकेत हैं। शहरों में आवास की कमी से झुग्गियाँ फैलती हैं। पानी, बिजली और परिवहन की माँग बढ़ती है। अधिक भूमि और संसाधनों की आवश्यकता वनों, कृषि-भूमि और पर्यावरण पर भी दबाव डालती है। हालाँकि इन कठिनाइयों के लिए केवल आबादी को दोष देना उचित नहीं; अव्यवस्थित विकास और संसाधनों का असमान वितरण भी जिम्मेदार हैं।

समाधान के लिए शिक्षा और जागरूकता का प्रसार आवश्यक है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा, महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता, उचित आयु में विवाह तथा स्वैच्छिक परिवार-नियोजन को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। गाँवों में स्वास्थ्य सेवाएँ और आजीविका के अवसर बढ़ने से अनियोजित शहरीकरण कम किया जा सकता है।

अतः आबादी को उपयोगी मानव-संसाधन बनाने के लिए संयमित जनसंख्या-वृद्धि के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार का विस्तार जरूरी है। जागरूक नागरिक और दूरदर्शी नीतियाँ मिलकर संतुलित विकास का मार्ग खोल सकती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यह निबंध विषय की भूमिका, मुख्य विचारों और व्यावहारिक संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े मुख्य बिंदु क्रम में लिख लें; फिर प्रत्येक अनुच्छेद को एक केंद्रीय विचार पर केंद्रित रखकर उपसंहार तक बढ़ें।

3(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

मेहनत ही किस्मत है [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवेचन, सुसंगत अनुच्छेद और विचारपूर्ण उपसंहार आवश्यक हैं।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें और मुख्य भाग में कारण, प्रभाव तथा उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपना विचार स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करें उक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए परिश्रम, नियमित अभ्यास, धैर्य और सही दिशा के संबंध पर लिखें। विद्यार्थी, किसान और खिलाड़ी के उदाहरण उपयोगी होंगे। अवसरों तथा परिस्थितियों की भूमिका स्वीकारें, पर भाग्य के भरोसे निष्क्रिय रहने की प्रवृत्ति का समर्थन न करें। निबंध के ऊपर सार्थक शीर्षक रखें। उसके बाद प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार को

अलग अनुच्छेदों में लिखें। भाषा सरल, शुद्ध और विषयानुकूल रहे।

चरण 2: पूरा आदर्श निबंध लिखें मेहनत ही किस्मत है

मनुष्य अक्सर किसी सफल व्यक्ति को देखकर कहता है कि उसकी किस्मत अच्छी है। किंतु सफलता के पीछे छिपे लंबे अभ्यास, अनुशासन और असफलताओं से संघर्ष को लोग आसानी से नहीं देख पाते। 'मेहनत ही किस्मत है' का आशय यही है कि अपने भविष्य को बेहतर बनाने का सबसे विश्वसनीय साधन हमारा सतत प्रयास है।

इच्छाएँ तभी साकार होती हैं जब उनके अनुरूप कर्म किए जाएँ। विद्यार्थी केवल अच्छे परिणाम की कामना करके सफल नहीं हो सकता। उसे नियमित अध्ययन, कठिन विषयों का अभ्यास और अपनी गलतियों का सुधार करना पड़ता है। किसान समय पर खेत तैयार करता है, बीज बोता है और फसल की देखभाल करता है। खिलाड़ी की कुछ क्षणों की जीत के पीछे वर्षों का प्रशिक्षण रहता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि उपलब्धि का आधार कर्म है।

परिश्रम का अर्थ केवल अधिक समय तक काम करना नहीं है। उसका सही दिशा में होना भी आवश्यक है। लक्ष्य स्पष्ट हो, कार्य की योजना बने और प्राप्त अनुभव के आधार पर तरीका सुधारा जाए, तभी मेहनत फलदायी बनती है। बिना सोचे एक ही गलती दोहराते रहना प्रगति नहीं है। असफलता मिलने पर अपनी तैयारी की समीक्षा करना तथा फिर प्रयास करना ही समझदारी है।

जीवन में परिस्थितियों और अवसरों का भी महत्त्व होता है। हर व्यक्ति को समान सुविधाएँ नहीं मिलतीं और कभी-कभी बाहरी बाधाएँ परिणाम को प्रभावित करती हैं। इसलिए असफल व्यक्ति को आलसी कह देना अनुचित होगा। फिर भी जो बातें हमारे नियंत्रण में हैं, उनमें ईमानदार प्रयास करना आवश्यक है। समाज को भी सभी के लिए शिक्षा और अवसर सुलभ बनाने चाहिए।

भाग्य की प्रतीक्षा में समय खोने से बेहतर है कि हम अपनी क्षमता पहचानें और रोज थोड़ा आगे बढ़ें। मेहनत आत्मविश्वास देती है, कौशल निखारती है और अवसर आने पर उसका उपयोग करने योग्य बनाती है। इस अर्थ में मनुष्य अपने कर्म से अपनी किस्मत गढ़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह निबंध विषय की भूमिका, मुख्य विचारों और व्यावहारिक संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े मुख्य बिंदु क्रम में लिख लें; फिर प्रत्येक अनुच्छेद को एक केंद्रीय विचार पर केंद्रित रखकर उपसंहार तक बढ़ें।

3(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

वृक्षारोपण एवं वृक्ष-संरक्षण [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विवेचन, सुसंगत अनुच्छेद और विचारपूर्ण उपसंहार आवश्यक हैं।
- प्रस्तावना से विषय का परिचय दें और मुख्य भाग में कारण, प्रभाव तथा उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपना विचार स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय करें पहले वृक्षों का पारिस्थितिक और सामाजिक महत्त्व बताएँ। उसके बाद कटान के दुष्परिणाम तथा रोपण से लेकर बड़े होने तक देखभाल की जरूरत समझाएँ। स्थानीय प्रजातियों का चयन, पानी, सुरक्षा और सामुदायिक जिम्मेदारी जैसे ठोस उपाय शामिल करें। निबंध के ऊपर सार्थक शीर्षक रखें। उसके बाद प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार को अलग अनुच्छेदों में लिखें। भाषा सरल, शुद्ध और विषयानुकूल रहे।

चरण 2: पूरा आदर्श निबंध लिखें वृक्षारोपण एवं वृक्ष-संरक्षण

वृक्ष पृथ्वी के जीवन-तंत्र का अनिवार्य अंग हैं। वे केवल हरियाली और सौंदर्य ही नहीं देते, बल्कि मनुष्य, पशु-पक्षियों और असंख्य छोटे जीवों के जीवन को सहारा भी देते हैं। इसलिए वृक्ष लगाना और पहले से मौजूद वृक्षों को बचाना दोनों हमारी सामूहिक जिम्मेदारी हैं।

वृक्ष प्रकाश-संश्लेषण के दौरान कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। उनकी छाया आसपास के तापमान को कम करने में सहायता करती है। जड़ें मिट्टी को बाँधकर उसके कटाव को रोकती हैं और भूमि में जल के प्रवेश को बढ़ाती हैं। अनेक पक्षियों तथा जीवों को वृक्षों से आश्रय और भोजन मिलता है। फल, औषधियाँ और अन्य उपयोगी पदार्थ भी हमें वृक्षों से प्राप्त होते हैं।

शहरों के विस्तार, सड़कों के निर्माण और अनियंत्रित कटान से वृक्षों की संख्या घटती है। इसके कारण जैव-विविधता को नुकसान पहुँचता है, भूमि का क्षरण बढ़ता है और स्थानीय पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता है। ऐसे में केवल वृक्षारोपण समारोह मनाना पर्याप्त नहीं है। लगाए

गए पौधे यदि पानी और सुरक्षा के अभाव में सूख जाएँ, तो अभियान का उद्देश्य पूरा नहीं होता।

वृक्षारोपण करते समय स्थानीय जलवायु, मिट्टी और उपलब्ध स्थान के अनुकूल प्रजातियाँ चुननी चाहिए। पौधों के बीच उचित दूरी रखनी चाहिए तथा उनके लिए नियमित सिंचाई और सुरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। विद्यालय, मोहल्ला-समितियाँ और पंचायतें पौधों की देखभाल का दायित्व बाँट सकती हैं। विद्यार्थियों को किसी पौधे के विकास का नियमित निरीक्षण करने की जिम्मेदारी देना उपयोगी होगा। पुराने वृक्षों की अनावश्यक कटाई रोकना और निर्माण-योजनाओं में उनके संरक्षण को स्थान देना भी आवश्यक है।

हर पौधा भविष्य की छाया है। हमारा लक्ष्य केवल लगाए गए पौधों की गिनती बढ़ाना नहीं, उन्हें स्वस्थ वृक्ष बनाना होना चाहिए। वृक्षारोपण जब निरंतर संरक्षण से जुड़ेगा, तभी आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, सुंदर और जीवनदायी पर्यावरण मिल सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष यह निबंध विषय की भूमिका, मुख्य विचारों और व्यावहारिक संदेश को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: पहले विषय से जुड़े मुख्य बिंदु क्रम में लिख लें; फिर प्रत्येक अनुच्छेद को एक केंद्रीय विचार पर केंद्रित रखकर उपसंहार तक बढ़ें।

---

4. प्लास्टिक थैलों के प्रयोग पर प्रतिबंध के उपरान्त भी उनके निरंतर बढ़ते प्रयोग पर चिन्ता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र में सार्वजनिक समस्या, उसका प्रभाव और व्यावहारिक समाधान स्पष्ट किए जाते हैं।
- पत्र का क्रम प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और हस्ताक्षर होता है।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य यह सार्वजनिक हित की समस्या पर संपादक को लिखा जाने वाला औपचारिक पत्र है। भाषा विनम्र, तथ्यपरक और संक्षिप्त रखनी चाहिए। विषय में प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक थैलों का बढ़ता प्रयोग लिखा जाएगा। पत्र का उद्देश्य समाचार-पत्र के माध्यम से प्रशासन और नागरिकों का ध्यान समस्या की ओर आकर्षित करना है।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना पहले बाजारों में जारी प्लास्टिक थैलों के प्रयोग का उल्लेख करें। फिर नालियाँ बंद होने, पशुओं को हानि और पर्यावरण-प्रदूषण जैसे दुष्परिणाम बताएँ। अंत में नियमित निरीक्षण, नियमों के प्रभावी पालन, जनजागरूकता और कपड़े अथवा जूट के थैलों को बढ़ावा देने का अनुरोध करें। शिकायत के साथ समाधान देना पत्र को प्रभावी बनाता है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 25, शांति विहार

दिल्ली

18 जुलाई 2014

संपादक महोदय

दैनिक जनवाणी

नई दिल्ली

विषय : प्रतिबंध के बावजूद प्लास्टिक थैलों के बढ़ते प्रयोग के संबंध में।

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन और नागरिकों का ध्यान प्लास्टिक थैलों के निरंतर बढ़ते प्रयोग की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। प्रतिबंध के बावजूद हमारे क्षेत्र की दुकानों और सब्जी-मंडियों में इन थैलों का खुलेआम उपयोग हो रहा है। दुकानदार इन्हें आसानी से उपलब्ध करा देते हैं और ग्राहक भी अपना थैला लाने की आवश्यकता नहीं समझते।

इस्तेमाल के बाद फेंके गए थैले नालियों को अवरुद्ध करते हैं। भोजन के अवशेषों के साथ इन्हें निगलने से पशुओं को हानि पहुँचती है। ये लंबे समय तक मिट्टी में बने रहकर पर्यावरण को दूषित करते हैं। इन्हें जलाना भी वायु-प्रदूषण बढ़ाता है।

प्रशासन को बाजारों में नियमित निरीक्षण करके प्रतिबंध का प्रभावी पालन सुनिश्चित करना चाहिए। साथ ही दुकानदारों और ग्राहकों को इनके दुष्प्रभाव समझाने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ। कपड़े और जूट के टिकाऊ थैले सुलभ कराए जाएँ तथा नागरिक घर

से अपना थैला लेकर निकलें।

कृपया इस समस्या को अपने समाचार-पत्र में स्थान देकर संबंधित अधिकारियों और जनसाधारण को आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमन कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में प्लास्टिक थैलों का बढ़ता प्रयोग, उसके दुष्परिणाम और प्रतिबंध के प्रभावी पालन हेतु ठोस सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: संपादक को लिखते समय व्यक्तिगत शिकायत से आगे बढ़कर जनहित, समस्या के प्रभाव और कार्यान्वित किए जा सकने वाले सुझाव जोड़ें।

अथवा

4. अपने क्षेत्र में आयोजित होने वाले रक्तदान-शिविर के लिए अपेक्षित कुछ डॉक्टरों की व्यवस्था-हेतु क्षेत्र के स्वास्थ्य-अधिकारी को एक अनुरोध-पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वास्थ्य-अधिकारी को अनुरोध-पत्र में आयोजन का उद्देश्य, स्थान, दिनांक और अपेक्षित सहायता स्पष्ट होनी चाहिए।
- रक्तदान-शिविर के लिए प्रशिक्षित चिकित्सकीय दल और सुरक्षित रक्त-संग्रह की व्यवस्था आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें प्रेषक की ओर से आयोजक संस्था का पता दें। इसके बाद दिनांक, स्वास्थ्य-अधिकारी का पद और पता, स्पष्ट विषय तथा विनम्र संबोधन लिखें। मुख्य भाग में शिविर की जानकारी और डॉक्टर उपलब्ध कराने का अनुरोध रखें। अंत में धन्यवाद, समापन, नाम और पद लिखें।

चरण 2: अनुरोध की सामग्री चुनें शिविर का उद्देश्य रक्तदान को प्रोत्साहित करना है। स्थान और समय बताने से स्वास्थ्य-विभाग डॉक्टरों की उपलब्धता तय कर सकता है। दाताओं की प्रारंभिक जाँच, सुरक्षित रक्त-संग्रह तथा आकस्मिक स्थिति की देखभाल के लिए चिकित्सकों और सहयोगी दल की अपेक्षा स्पष्ट करें। स्थानीय व्यवस्था आयोजकों द्वारा करने का उल्लेख भी उपयोगी है।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र युवा सेवा समिति

42, आदर्श नगर

दिल्ली

18 जुलाई 2014

क्षेत्रीय स्वास्थ्य-अधिकारी

स्वास्थ्य विभाग

आदर्श नगर, दिल्ली

विषय : रक्तदान-शिविर हेतु डॉक्टरों की व्यवस्था करने का अनुरोध।

महोदय,

हमारी युवा सेवा समिति आगामी 27 जुलाई 2014 को आदर्श नगर के सामुदायिक भवन में प्रातः 9 बजे से अपराह्न 2 बजे तक स्वैच्छिक रक्तदान-शिविर आयोजित कर रही है। इस आयोजन का उद्देश्य जरूरतमंद रोगियों के लिए रक्त की उपलब्धता बढ़ाना और क्षेत्रवासियों को नियमित स्वैच्छिक रक्तदान के प्रति जागरूक करना है। अनेक नागरिकों ने शिविर में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की है।

शिविर के सुरक्षित संचालन के लिए योग्य डॉक्टरों की आवश्यकता है। आपसे विनम्र अनुरोध है कि रक्तदाताओं की प्रारंभिक स्वास्थ्य-जाँच,

रक्तदान की पात्रता निर्धारित करने और रक्तदान के दौरान चिकित्सकीय निगरानी के लिए कुछ डॉक्टरों की व्यवस्था करें। कृपया संबंधित रक्त-बैंक के प्रशिक्षित कर्मचारियों, आवश्यक उपकरणों तथा आकस्मिक चिकित्सा-सहायता की व्यवस्था में भी सहयोग प्रदान करें, ताकि रक्त-संग्रह निर्धारित चिकित्सा-मानकों के अनुसार हो सके।

समिति भवन, स्वच्छ पेयजल, विश्राम-स्थान, जलपान और स्वयंसेवकों की व्यवस्था करेगी। आपके विभाग के निर्देशों का पूरा पालन किया जाएगा। कृपया चिकित्सकीय दल की उपलब्धता की सूचना समय पर देने की कृपा करें, जिससे आयोजन की शेष तैयारियाँ पूरी की जा सकें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमन कुमार

सचिव, युवा सेवा समिति

चरण 4: निष्कर्ष यह अनुरोध-पत्र शिविर की आवश्यक जानकारी देते हुए डॉक्टरों और संबंधित चिकित्सकीय सहयोग की व्यवस्था का विनम्र निवेदन करता है।

त्वरित सुझाव: अनुरोध-पत्र में सहायता माँगने के साथ आयोजन की तिथि, समय, स्थान और सहायता की स्पष्ट भूमिका अवश्य लिखें।

5(क)(i). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

मुद्रित माध्यम के प्रकार लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम में लिखित सामग्री कागज पर छापकर पाठकों तक पहुँचाई जाती है।
- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें मुद्रित माध्यम के प्रमुख रूप हैं।

चरण 1: माध्यम का आधार पहचानें जिस जनसंचार माध्यम में सामग्री छपे हुए रूप में पढ़ी जाती है, उसे मुद्रित माध्यम कहते हैं। इसका आधार मुद्रित शब्द और चित्र हैं।

चरण 2: प्रमुख प्रकार लिखें मुद्रित माध्यम के प्रमुख प्रकार समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें हैं। इनमें समाचार, विचार, जानकारी तथा साहित्य पाठक तक मुद्रित रूप में पहुँचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम के प्रमुख प्रकार समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में छपे हुए माध्यमों के नाम लिखें; रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट को इस सूची में शामिल न करें।

5(क)(ii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार की तात्कालिकता और महत्त्व के कारण उसे तत्काल प्रसारित करना आवश्यक हो सकता है।
- ब्रेकिंग न्यूज़ किसी बड़ी घटना की सबसे पहले दी जाने वाली संक्षिप्त सूचना होती है।

चरण 1: तात्कालिकता पहचानें अचानक हुई महत्त्वपूर्ण घटना की सूचना दर्शकों या श्रोताओं तक बिना विलंब पहुँचाई जाती है। इसके लिए नियमित कार्यक्रम या समाचार-क्रम को बीच में रोका जा सकता है।

चरण 2: परिभाषा स्पष्ट करें किसी बड़ी या महत्त्वपूर्ण घटना का समाचार मिलते ही उसकी तत्काल प्रसारित की गई संक्षिप्त प्रारंभिक सूचना फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ कहलाती है। विस्तृत विवरण बाद में दिया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष बड़ी और महत्त्वपूर्ण घटना की तत्काल प्रसारित संक्षिप्त प्रारंभिक सूचना को फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़ कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में बड़ी घटना, तत्काल प्रसारण और संक्षिप्त प्रारंभिक सूचना—इन बातों को जोड़कर उत्तर लिखें।

5(क)(iii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

पत्रकारों के किन्हीं दो प्रकारों का उल्लेख कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण समाचार-संस्था के साथ उनके कार्य-संबंध के आधार पर किया जा सकता है।
- पूर्णकालिक पत्रकार और स्वतंत्र पत्रकार इसके दो प्रमुख प्रकार हैं।

चरण 1: पहला प्रकार पहचानें पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संगठन का नियमित कर्मचारी होता है और उसी संस्था के लिए निर्धारित दायित्वों के अनुसार काम करता है।

चरण 2: दूसरा प्रकार पहचानें स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्था का नियमित कर्मचारी हुए बिना विभिन्न समाचार-पत्रों या अन्य माध्यमों के लिए लेख और समाचार तैयार करता है। उसे फ्रीलांसर भी कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारों के दो प्रकार हैं—पूर्णकालिक पत्रकार और स्वतंत्र पत्रकार।

त्वरित सुझाव: किन्हीं दो प्रकार पूछे जाने पर दो स्पष्ट श्रेणियाँ लिखें; उनके कार्य-संबंध का छोटा अंतर याद रखने में सहायता करता है।

5(क)(iv). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

समाचार-लेखन के छह ककार कौन-से हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार किसी घटना की तथ्यपूर्ण जानकारी देता है; उसके मूल प्रश्नों को छह ककार कहते हैं।
- इन प्रश्नों से घटना का स्वरूप, स्थान, समय, संबंधित व्यक्ति, कारण और प्रक्रिया स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: छह प्रश्न पहचानिए समाचार पढ़ने वाला जानना चाहता है कि घटना क्या है, कहाँ और कब हुई तथा उससे कौन संबंधित है। इन प्रश्नों से घटना की बुनियादी सूचना मिलती है।

चरण 2: कारण और प्रक्रिया जोड़िए क्यों घटना के कारण को और कैसे उसके घटित होने के ढंग को स्पष्ट करता है। इन दोनों को जोड़ने से सूचना पूर्ण होती है। छह ककारों में केवल प्रश्नवाचक शब्द लिखना पर्याप्त है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-लेखन के छह ककार हैं—क्या, कहाँ, कब, कौन, क्यों और कैसे।

त्वरित सुझाव: घटना, स्थान, समय, व्यक्ति, कारण और ढंग याद रखकर क्रमशः छह ककार लिखिए।

5(क)(v). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

विशेष लेखन किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन किसी निश्चित विषय या क्षेत्र पर केंद्रित पत्रकारिता है।
- इस लेखन में विषय की गहरी जानकारी और उसकी विशिष्ट शब्दावली की समझ आवश्यक होती है।

चरण 1: विशेष लेखन का आशय समझिए अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान, कृषि या शिक्षा जैसे किसी खास क्षेत्र के विषयों पर केंद्रित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इसमें सामान्य सूचना के साथ विषय की विशिष्ट जानकारी दी जाती है।

चरण 2: उसकी विशेषता पहचानिए लेखक संबंधित क्षेत्र की पृष्ठभूमि, तथ्यों और प्रभावों का विश्लेषण करता है। इसलिए केवल घटना बता देना पर्याप्त नहीं; विषय का ज्ञान और उसे पाठक के लिए स्पष्ट करने की क्षमता भी अपेक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी खास विषय या क्षेत्र की विशेषज्ञ जानकारी के आधार पर किया जाने वाला तथ्यपूर्ण और विश्लेषणात्मक लेखन विशेष लेखन कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में खास क्षेत्र, विशेषज्ञ जानकारी और विश्लेषण जोड़िए; उदाहरण के लिए विज्ञान या खेल लिख सकते हैं।

5(ख). 'जातीयता का फैलता हुआ विष' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का क्रमबद्ध, विचारपूर्ण और तथ्यसंगत विवेचन किया जाता है।
- जातीयता पर लेखन में जातिगत श्रेष्ठता, भेदभाव और सामाजिक विघटन की आलोचना करते हुए समानता के उपाय प्रस्तुत करने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण तय कीजिए आलेख को उपयुक्त शीर्षक और लेखक के नाम से आरंभ करें। प्रस्तावना में समस्या का परिचय दें, मध्य भाग में उसके कारण और दुष्परिणाम समझाएँ तथा अंत में समाधान और स्पष्ट संदेश रखें। भाषा संयत रखें और किसी जाति के प्रति अपमानजनक टिप्पणी न करें।

चरण 2: विचारों का क्रम बनाइए जन्म के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन जातीयता की जड़ है। सामाजिक व्यवहार और राजनीति में इसके प्रभाव से अविश्वास तथा संघर्ष बढ़ते हैं। शिक्षा, कानून का निष्पक्ष पालन और साझा सामाजिक प्रयास इससे बाहर निकलने के रास्ते हैं।

चरण 3: पूरा आदर्श आलेख लिखिए **जातीयता का फैलता हुआ विष**

लेखक: अभय कुमार

मनुष्य की पहचान उसके विचारों और कर्मों से होनी चाहिए, जन्म से नहीं। फिर भी समाज में जातिगत ऊँच-नीच का भाव अनेक रूपों में बना हुआ है। जब अपनी जाति के प्रति लगाव दूसरों को हीन मानने लगे, तो वह सामाजिक एकता को नष्ट करने वाला विष बन जाता है।

जातीयता का प्रभाव संबंधों, विवाह और सार्वजनिक जीवन तक दिखाई देता है। कहीं जाति के कारण अपमान और बहिष्कार होता है, तो कहीं योग्यता से अधिक जातिगत पहचान को महत्त्व दिया जाता है। चुनावों में जातीय भावनाएँ भड़काने से नागरिकों की वास्तविक समस्याएँ पीछे छूट जाती हैं। इससे असमानता बढ़ती है और परस्पर विश्वास टूटता है।

इस समस्या की जड़ में रूढ़ धारणाएँ, अशिक्षा और स्वार्थपूर्ण राजनीति हैं। केवल उपदेश देने से स्थिति नहीं बदलेगी। परिवार और विद्यालय बच्चों को समानता तथा मानवीय गरिमा का व्यवहार सिखाएँ। जातिगत भेदभाव और हिंसा के विरुद्ध कानून का निष्पक्ष पालन हो। सामाजिक संस्थाएँ साझा कार्यों और संवाद के अवसर बढ़ाएँ।

हमें अपने व्यवहार की भी जाँच करनी होगी। मित्रता, सहयोग और सम्मान में जाति को बाधा न बनने देना बदलाव की शुरुआत है। संविधान की समानता और बंधुत्व की भावना को अपनाकर ही जातीयता के विष का प्रभाव घटाया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख जातीय भेदभाव को सामाजिक एकता के लिए हानिकारक बताते हुए समानता, शिक्षा, निष्पक्ष कानून और व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव का आह्वान करता है।

त्वरित सुझाव: विष की छवि को भेदभाव और विघटन से जोड़िए; अंत में केवल नारा देने के बजाय ठोस सामाजिक उपाय लिखिए।

अथवा

5(ख). 'ग्राम्य जीवन की चुनौतियाँ' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान आलेख में समस्या का परिचय, उसके विविध पक्ष और व्यावहारिक समाधान क्रम से आते हैं।
- ग्राम्य जीवन की चुनौतियों में कृषि, आजीविका, मूलभूत सेवाओं और सामाजिक समानता को संतुलित रूप में देखना चाहिए।

चरण 1: आलेख का प्रारूप बनाइए शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। भूमिका में ग्राम्य जीवन का महत्त्व बताकर मुख्य समस्याओं की ओर आएँ। विषय का विवेचन कृषि और रोजगार से शुरू करके शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आधारभूत सुविधाओं तक ले जाएँ। समापन में ग्रामवासियों की सहभागिता और विकास का सकारात्मक संदेश दें।

चरण 2: विषय की रूपरेखा तैयार कीजिए खेती की अनिश्चितता, सीमित रोजगार और सेवाओं की कमी पलायन बढ़ाती है। समाधान में सिंचाई, स्थानीय उद्योग, बेहतर विद्यालय, चिकित्सा और जवाबदेह प्रशासन शामिल करें। गाँव को केवल अभाव का प्रतीक न बनाएँ; उसकी संभावनाएँ भी स्पष्ट करें।

चरण 3: पूरा आदर्श आलेख लिखिए **ग्राम्य जीवन की चुनौतियाँ**

लेखक: अभय कुमार

गाँव हमारे सामाजिक जीवन और कृषि व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण आधार हैं। प्रकृति से निकटता, सामुदायिक सहयोग और लोकसंस्कृति ग्राम्य जीवन की विशेषताएँ हैं। किंतु इन सुंदर पक्षों के साथ ऐसी कठिनाइयाँ भी जुड़ी हैं, जो ग्रामीणों के जीवन और भविष्य को प्रभावित करती हैं।

सबसे बड़ी चुनौती आजीविका की अनिश्चितता है। खेती का वर्षा पर निर्भर रहना, सिंचाई की कमी और उपज का उचित मूल्य न मिलना किसान की चिंता बढ़ाते हैं। छोटे किसानों के लिए आधुनिक साधन जुटाना कठिन होता है। खेती के बाहर सीमित रोजगार होने से युवाओं को शहरों की ओर जाना पड़ता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी भी गंभीर समस्या है। अच्छे विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक और सुलभ चिकित्सा के अभाव में अवसर असमान हो जाते हैं। सड़क, स्वच्छ पेयजल, बिजली और संचार सुविधाओं की कमी विकास को बाधित करती है। जातिगत भेदभाव और महिलाओं की सीमित भागीदारी जैसी सामाजिक समस्याओं का समाधान भी आवश्यक है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन चाहिए। सिंचाई और भंडारण की व्यवस्था सुधरे, कृषि प्रशिक्षण मिले तथा कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाए। विद्यालयों और स्वास्थ्य केंद्रों में आवश्यक कर्मचारी हों। ग्रामसभा के माध्यम से लोग विकास की प्राथमिकताएँ तय करें और खर्च की निगरानी करें।

ग्राम्य विकास केवल सुविधाएँ पहुँचाने का कार्य नहीं, सम्मानपूर्ण जीवन और समान अवसर सुनिश्चित करने का प्रयास है। ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी से गाँव आत्मनिर्भर तथा समृद्ध बन सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख ग्राम्य जीवन की आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य संबंधी और सामाजिक चुनौतियों का विवेचन करके समावेशी विकास तथा जनभागीदारी का रास्ता प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: समस्याओं की सूची के साथ हर प्रमुख क्षेत्र का उपाय जोड़िए और ग्रामीण जीवन की संभावनाएँ भी रेखांकित कीजिए।

6. 'नैतिकता का गिरता हुआ स्तर' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय दृष्टि और रोचक शैली में प्रस्तुत करता है। इसमें प्रभावी शीर्षक, आकर्षक आरंभ, समस्या का विवेचन और सार्थक समापन होता है।
- इस विषय में रोज़मर्रा के व्यवहार में नैतिक मूल्यों के क्षरण, उसके कारणों और सुधार के उपायों को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना आलेख का शीर्षक जिज्ञासा जगाने वाला हो। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें। फिर ईमानदारी, सहानुभूति और उत्तरदायित्व में आती कमी को समझाएँ। सफलता की अंधी दौड़, स्वार्थ और अनुकरण की प्रवृत्ति का उल्लेख करके परिवार, विद्यालय तथा व्यक्ति की भूमिका स्पष्ट करें। अप्रमाणित आँकड़ों या किसी पूरे वर्ग पर आरोप लगाने से बचें।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर गिरते मूल्य, खोता विश्वास

लेखक: अजय

सड़क पर घायल पड़े व्यक्ति के पास भीड़ तो है, लेकिन सहायता के लिए आगे बढ़ने वाले हाथ कम हैं। कोई दृश्य देखता है, कोई उसकी तस्वीर बनाता है। यह दृश्य हमें अपने भीतर झाँकने को विवश करता है। सुविधाएँ बढ़ती जा रही हैं, पर क्या हमारी संवेदनाएँ भी बढ़ रही हैं?

नैतिकता केवल उपदेशों का विषय नहीं; वह हमारे दैनिक आचरण की कसौटी है। कतार तोड़ना, लाभ के लिए झूठ बोलना, काम में बेईमानी करना और दूसरों के अधिकारों की उपेक्षा करना इसी गिरावट के रूप हैं। जब साधनों की शुचिता के स्थान पर केवल सफलता को महत्त्व मिलता है, तब गलत व्यवहार भी चतुराई कहलाने लगता है।

प्रतिष्ठा को धन और दिखावे से मापने की आदत ने इस संकट को गहरा किया है। बच्चे बड़ों की कथनी और करनी का अंतर पहचानते हैं। यदि घर और समाज ईमानदारी की बात करें, पर व्यवहार में अनुचित लाभ को स्वीकारें, तो शिक्षा का प्रभाव कम हो जाता है। विश्वास घटता है और संबंध भी स्वार्थ का हिसाब बनने लगते हैं।

फिर भी आशा समाप्त नहीं हुई है। खोया सामान लौटाने वाला नागरिक और संकट में मदद करने वाला पड़ोसी बताते हैं कि मूल्य जीवित हैं। आवश्यकता ऐसे आचरण को सम्मान देने की है। परिवार संवाद और उदाहरण से संस्कार दे; विद्यालय सहयोग, संवेदना और उत्तरदायित्व को अभ्यास बनाएँ। सार्वजनिक जीवन में जवाबदेही भी आवश्यक है।

बदलाव की शुरुआत अपने छोटे निर्णयों से हो सकती है। सच बोलना, वचन निभाना और असहाय की सहायता करना किसी बड़े अभियान की प्रतीक्षा नहीं करते। नैतिकता का स्तर तभी उठेगा जब हम दूसरों से पहले अपने आचरण का मूल्यांकन करेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर नैतिक गिरावट को दैनिक जीवन के प्रसंगों से जोड़ता है और व्यक्तिगत आचरण, पारिवारिक उदाहरण तथा सामाजिक जवाबदेही में सुधार का रास्ता दिखाता है।

त्वरित सुझाव: नैतिकता पर फ़ीचर लिखते समय एक मानवीय दृश्य से आरंभ करें और अंत में व्यवहार में अपनाने योग्य उपाय दें।

अथवा

6. 'लड़कियों की घटती जनसंख्या' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में सामाजिक समस्या को मानवीय संवेदना, रोचक प्रस्तुति और विवेचन के साथ उठाया जाता है। शीर्षक, प्रभावी आरंभ और चिंतनशील अंत इसका आधार हैं।
- लड़कियों की घटती जनसंख्या का विवेचन लैंगिक भेदभाव, पुत्र की प्राथमिकता और बेटियों के समान अधिकार के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप तथा सामग्री की योजना शीर्षक में समस्या की गंभीरता उभारें। आरंभ बेटियों की अनुपस्थिति की कल्पना या किसी घरेलू प्रसंग से करें। आगे पुत्र की चाह, कन्या के प्रति उपेक्षा और लिंग चयन की प्रवृत्ति पर चर्चा करें। अंत में शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, समान अवसर और सामाजिक सोच के परिवर्तन को समाधान के रूप में प्रस्तुत करें। कोई अप्रमाणित संख्या न दें।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर आँगन से गायब होती किलकारियाँ

लेखिका: सीमा

बेटे के जन्म पर मिठाई बाँटने वाला घर कभी बेटी के जन्म पर चुप क्यों हो जाता है? नवजात को अभी संसार का परिचय भी नहीं मिला, लेकिन समाज उसके स्वागत का तरीका तय कर चुका होता है। लड़कियों की घटती जनसंख्या के पीछे छिपा यह भेदभाव हमें कठिन सवालों के सामने खड़ा करता है।

पुत्र को वंश का उत्तराधिकारी और बुढ़ापे का सहारा मानने की सोच बेटी को पराया धन बना देती है। विवाह के खर्च और दहेज का भय इस धारणा को और बल देता है। कुछ परिवार लिंग चयन का सहारा लेते हैं; कहीं जन्म लेने के बाद भी बेटी को पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा में बराबरी नहीं मिलती। समस्या केवल संख्या की नहीं, जीवन के अधिकार और सम्मान की है।

जिस समाज में बेटियों के आने का मार्ग रोका जाता है, वहाँ समानता का दावा खोखला हो जाता है। स्त्री को केवल किसी की बहन, पत्नी या माँ के रूप में मूल्यवान समझना भी पर्याप्त नहीं है। उसका अपना व्यक्तित्व, अपनी प्रतिभा और अपने सपने हैं। उसे स्वतंत्र मनुष्य की तरह जीने का अवसर मिलना चाहिए।

इस स्थिति को बदलने के लिए कानून का प्रभावी पालन और लिंग चयन की रोकथाम आवश्यक है। साथ ही परिवारों की सोच बदलनी होगी। बेटी को पर्याप्त पोषण, शिक्षा, सुरक्षित वातावरण और निर्णय लेने का अधिकार मिले। दहेज का विरोध और संपत्ति में समान अधिकार का सम्मान घर से शुरू हो। विद्यालय और सामाजिक संस्थाएँ रूढ़ धारणाओं को चुनौती दें।

बेटियों की उपलब्धियाँ हमें संभावनाओं का संसार दिखाती हैं। लेकिन समान व्यवहार उनके असाधारण बनने की शर्त पर नहीं मिलना चाहिए। हर बेटी जीवन और सम्मान की अधिकारी है। आँगन की किलकारियाँ तभी सुरक्षित होंगी जब जन्म के स्वागत में बेटे और बेटी का भेद मिटेगा।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर लड़कियों की घटती जनसंख्या को लैंगिक भेदभाव से जोड़ता है और समान अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सामाजिक मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: इस फ़ीचर में बेटियों की संख्या की चिंता के साथ उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व और समान अधिकार को भी केंद्र में रखें।

---

7. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता ।
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ ।
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). संसार के साथ कवि का किस प्रकार का नाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में कवि अपने आंतरिक भावजगत और संसार की भौतिक आकांक्षाओं का अंतर स्पष्ट करता है।
- उत्तर का आधार पहली पंक्ति और वैभव जुटाने वाली पृथ्वी को ठुकराने का कथन है।

चरण 1: नाते का स्वरूप कवि का संसार से विचारों और जीवन-मूल्यों का मेल नहीं है। वह कहता है, "मैं और, और जग और, कहाँ का नाता। इसका आशय है कि उसकी रुचियाँ तथा आकांक्षाएँ संसार से भिन्न हैं; इसलिए उसके और जग के बीच आत्मीय सामंजस्य नहीं बनता। यह कथन भौतिक जीवन-दृष्टि से उसके अलगाव को व्यक्त करता है।

चरण 2: अलगाव का कारण संसार पृथ्वी पर धन-संपत्ति और वैभव जोड़ने में लगा है, जबकि कवि उस वैभव को ठुकराता है। वह अपने मन में भावनाओं और कल्पनाओं के नए संसार रचता है। इस प्रकार जग की बाहरी संपदा और कवि की भीतरी संवेदना के लक्ष्य भिन्न हैं। इसी मूल्यगत भिन्नता के कारण कवि संसार से अपना नाता नहीं मानता।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का संसार से मूल्यों का मेल नहीं है, क्योंकि संसार भौतिक वैभव चाहता है और कवि भावनाओं तथा कल्पना के अपने जगत में जीता है।

त्वरित सुझाव: "कहाँ का नाता का कारण बताते समय संसार के वैभव-संग्रह और कवि के वैभव-त्याग का अंतर अवश्य लिखें।

7(ख). 'जग बनाने और मिटाने' से कवि का क्या आशय है ? वह किस रूप में जग की रचना करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- "जग बनाना और मिटाना कवि की कल्पना तथा मन में बदलते भावलोक का संकेत है।
- यहाँ रचना भौतिक वस्तुओं की नहीं, भावों, सपनों और काव्य के संसार की है।

चरण 1: बनाने और मिटाने का आशय कवि के मन में अनेक भाव, इच्छाएँ और कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। उनके आधार पर वह अपने लिए एक नया संसार रचता है। भाव बदलने या कल्पना से संतोष न मिलने पर वह उस मानसिक संसार को छोड़ देता है और फिर नई सृष्टि करता है। "बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता इसी निरंतर रचनात्मक प्रक्रिया को व्यक्त करता है।

चरण 2: जग की रचना का रूप कवि अपने अनुभवों और संवेदनाओं को कल्पना के सहारे भाव-जगत का रूप देता है। यह जग उसकी काव्य-रचना में अभिव्यक्त होता है। इसलिए जग की रचना से आशय धरती पर धन, भवन या अन्य भौतिक वस्तुएँ जोड़ना नहीं है। उसका बनाया संसार भावनाओं और कल्पना का संसार है, जिसे वह कविता के रूप में आकार देता है।

चरण 3: निष्कर्ष जग बनाने-मिटाने का आशय मन में कल्पना और भावों के संसार रचना तथा छोड़ना है; कवि इन्हीं को काव्य के रूप में अभिव्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से लिखें: मन के संसार का बनना-मिटना और उसका कविता के रूप में सृजन।

7(ग). वैभवशाली पृथ्वी से भी कवि का लगाव क्यों नहीं है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की दृष्टि में बाहरी संपदा से अधिक महत्त्व हृदय के भावों और संवेदनाओं का है।
- "जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव के साथ "मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता का विरोध उत्तर की कुंजी है।

चरण 1: संसार की प्राथमिकता संसार पृथ्वी पर वैभव एकत्र करने को महत्त्व देता है। उसके लिए धन-संपत्ति और बाहरी समृद्धि आकर्षण के केंद्र हैं। कवि इस प्रवृत्ति से अपने को अलग रखता है। पृथ्वी का वैभवशाली होना उसके लिए लगाव का पर्याप्त कारण नहीं है, क्योंकि उसकी संतुष्टि का आधार बाहरी संपदा नहीं है।

चरण 2: कवि की विरक्ति का कारण कवि भावनाओं और कल्पना की संपदा को महत्त्व देता है। वह वैभव जोड़ने की दौड़ में शामिल नहीं होना चाहता, इसलिए पृथ्वी को प्रति पग ठुकराने की बात कहता है। आगे राजाओं के प्रासादों से अधिक मूल्यवान खंडहर के भाग

का कथन भी इसी भिन्न मूल्य-दृष्टि को उभारता है। उसे भाव-संपन्न जीवन प्रिय है, केवल धन-संपन्न जीवन नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष वैभवशाली पृथ्वी से कवि का लगाव इसलिए नहीं है कि वह भौतिक संपदा का आकर्षण छोड़कर भावनाओं और अपने आंतरिक जगत को अधिक मूल्य देता है।

त्वरित सुझाव: पृथ्वी को ठुकराने का अर्थ स्पष्ट करते समय उसे भौतिक वैभव के मोह के त्याग से जोड़ें।

7(घ). 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' से कवि क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के निजी दुःख और उसके गीत का संबंध समझना आवश्यक है।
- शांत अभिव्यक्ति के भीतर छिपी संवेदना और विद्रोह को पहचानना चाहिए।

चरण 1: रोदन में राग का आशय कवि अपने व्यक्तिगत दुःख, पीड़ा और रुदन को गीत के मधुर स्वर में ढालकर साथ लिए चलता है। उसकी कविता में करुणा है, किंतु वह केवल विलाप बनकर नहीं रह जाती; दुःख भी संगीत और कलात्मक अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण कर लेता है। इसीलिए वह कहता है कि उसके रोदन में भी राग है।

चरण 2: शीतल वाणी में आग का आशय कवि की वाणी सुनने में शांत, मधुर और संयमित है, पर उसके भीतर तीव्र अनुभूतियों, आत्मसम्मान और विद्रोह की ज्वाला छिपी है। वह संसार की वैभवप्रियता से असहमत है। बाहरी शीतलता उसके अंतर्मन की प्रखरता को समाप्त नहीं करती; दोनों एक साथ विद्यमान हैं। इन विरोधी भावों के मेल से कवि के संवेदनशील और विद्रोही व्यक्तित्व की जटिलता व्यक्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि दुःख को मधुर गीत में और अंतर की प्रखर भावनाओं को शांत वाणी में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: दोनों पदों में बाहर दिखाई देने वाले रूप और भीतर के भाव का संबंध अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

अथवा

7. आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल !
त्रस्त-नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार !
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). 'त्रस्त-नयन' कौन हैं ? उनके मुख ढाँपने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादल क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है।
- धनिकों की प्रतिक्रिया उनके शोषण से प्राप्त वैभव की असुरक्षा प्रकट करती है।

चरण 1: त्रस्त-नयन की पहचान पद्यांश में 'त्रस्त-नयन' वे धनी और शोषक लोग हैं जिनकी आँखों में भय समा गया है। 'आतंक अंक पर काँप रहे हैं धनी' पंक्ति उनकी पहचान स्पष्ट करती है। वे अपने धन और प्रभुत्व के कारण सुरक्षित दिखाई देते हैं, किंतु बादल की गर्जना उन्हें भीतर तक डरा देती है।

चरण 2: मुख ढाँपने का कारण बादल का वज्र जैसा गर्जन क्रांति के आगमन का संकेत है। शोषक धनिकों को आशंका है कि परिवर्तन उनकी अन्यायपूर्ण व्यवस्था तथा संचित वैभव को नष्ट कर देगा। इसी आतंक से वे काँपते हैं और अपना मुख ढाँप लेते हैं। उनका भय उस कृषक की आशा के विपरीत है जो बादल को बुला रहा है। इस प्रकार एक ही गर्जना शोषक के लिए संकट और पीड़ित के लिए आशा का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष त्रस्त-नयन भयभीत धनिक हैं; क्रांति से अपने वैभव और प्रभुत्व के विनाश की आशंका के कारण वे मुख ढाँप रहे हैं।

त्वरित सुझाव: पहचान के लिए 'धनी' शब्द और कारण के लिए बादल के क्रांतिकारी प्रतीक को साथ जोड़िए।

7(ख). कृषक की अधीरता का क्या कारण है ? उसकी शारीरिक दशा पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कृषक बादल को जीवन और परिवर्तन देने वाली शक्ति मानता है।
- शारीरिक वर्णन में शोषण का परिणाम मूर्त रूप पाता है।

चरण 1: अधीरता का कारण कृषक वर्षा और जीवनदायी परिवर्तन के लिए व्याकुल है। खेती तथा जीवन का आधार पानी है और वह शोषण से भी मुक्ति चाहता है। इसीलिए वह बादल को 'विप्लव के वीर' और 'जीवन के पारावार' कहकर बुलाता है। बादल में उसे अपनी विपन्न दशा बदलने और नया जीवन मिलने की आशा दिखाई देती है।

चरण 2: शारीरिक दशा का वर्णन कवि ने उसकी बाँहों को 'जीर्ण' और शरीर को 'शीर्ण' कहा है। निरंतर श्रम और शोषण ने उसका पोषण तथा बल छीन लिया है। 'चूस लिया है उसका सार' और 'हाड़-मात्र ही है आधार' से स्पष्ट है कि वह अत्यंत दुर्बल, कृश और लगभग अस्थिपंजर बन गया है। उसका शरीर उसकी दयनीय आर्थिक दशा और असहाय जीवन की साक्षी है।

चरण 3: निष्कर्ष वर्षा और शोषण से मुक्ति की आशा कृषक को अधीर बनाती है; उसका शरीर दुर्बल, क्षीण और हड्डियों का ढाँचा रह गया है।

त्वरित सुझाव: अधीरता के उत्तर में बादल से मिलने वाली आशा और दशा के उत्तर में पद्यांश के शारीरिक संकेत दीजिए।

7(ग). 'विप्लव का वीर' कौन है ? उसके लिए यह सम्बोधन क्यों प्रयुक्त किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विप्लव का अर्थ व्यापक क्रांतिकारी परिवर्तन है।
- बादल की गर्जना शोषकों के भय और कृषक की आशा से जुड़ी है।

चरण 1: संबोधन की पहचान 'विप्लव का वीर' बादल है। कृषक उसी को अधीर होकर पुकार रहा है। कवि ने बादल को मानवीय वीर का

रूप दिया है जो अपनी प्रचंड शक्ति और गर्जना के साथ आता है। इस संबोधन में बादल का केवल प्राकृतिक रूप नहीं, उसका परिवर्तनकारी और क्रांतिकारी रूप सामने आता है।

चरण 2: संबोधन का औचित्य बादल का वज्र-गर्जन धनिकों को आतंकित करता है, जबकि पीड़ित कृषक उसे आशाभरी दृष्टि से बुलाता है। वह वर्षा द्वारा सूखी धरती को नया जीवन देता है और प्रतीक रूप में शोषण की व्यवस्था बदलने की शक्ति बनता है। अन्याय से संघर्ष और पीड़ितों को नवजीवन देने की इसी क्षमता के कारण उसे विप्लव का वीर कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को विप्लव का वीर कहा गया है क्योंकि वह शोषकों को डराने और कृषक को नया जीवन देने वाले क्रांतिकारी परिवर्तन का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: संबोधन समझाते समय धनिक के भय और कृषक की आशा, दोनों प्रतिक्रियाओं से प्रमाण दीजिए।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

'चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शरीर का क्षय आर्थिक और सामाजिक शोषण का परिणाम दिखाया गया है।
- सार चूसने और केवल हाड़ बचने की अभिव्यक्तियाँ अत्यधिक दुर्बलता का बिंब हैं।

चरण 1: सार चूस लेने का अर्थ कवि कहता है कि शोषण ने कृषक की जीवनशक्ति और शरीर का पोषण छीन लिया है। कठोर परिश्रम करने पर भी उसे अपने श्रम का उचित फल नहीं मिलता। शोषक व्यवस्था उसका सब कुछ अपने लाभ के लिए खींच लेती है। 'सार' से शरीर का बल और जीवन के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का भाव व्यक्त होता है।

चरण 2: हाड़-मात्र आधार का अर्थ कृषक का शरीर इतना कृश हो गया है कि मांस और शक्ति मानो शेष ही नहीं रहे; केवल हड्डियों का ढाँचा उसे सँभाले हुए है। यह कथन उसकी अत्यंत दीन और दुर्बल अवस्था का मार्मिक चित्र है। इसके माध्यम से कवि पीड़ित कृषक के प्रति करुणा और उसे ऐसी दशा में पहुँचाने वाले शोषण के प्रति विरोध व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि निरंतर शोषण ने कृषक की सारी शक्ति छीन ली है और उसका शरीर केवल हड्डियों का ढाँचा बन गया है।

त्वरित सुझाव: दोनों पंक्तियों का संबंध बनाए रखिए: पहले जीवनशक्ति का क्षय, फिर उसके शारीरिक परिणाम को समझाइए।

8. तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबेको दोऊ ।
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक ही व्यंजन की आवृत्ति से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य अनुप्रास कहलाता है।
- उदाहरण के साथ आवृत्त व्यंजन बताने से अलंकार की पहचान स्पष्ट होती है।

चरण 1: पहला उदाहरण 'जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ' में 'जाको', 'कहै' और 'कछु' शब्दों में क् ध्वनि की आवृत्ति है। विशेष रूप से

'कहै कछु' में यह समान व्यंजन स्पष्ट सुनाई देता है। एक ही व्यंजन के बार-बार आने से कथन में ध्वनिगत प्रवाह और लय उत्पन्न होते हैं; इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण 'दैबेको दोऊ' में द् व्यंजन की आवृत्ति हुई है। दोनों शब्दों के आरंभ में समान ध्वनि होने से पद में श्रुतिमाधुर्य आता है। अनुप्रास पहचानते समय केवल शब्दों का अर्थ या अंतिम तुक नहीं, आवृत्त व्यंजन देखना चाहिए। यहाँ द् की पुनरावृत्ति स्वतंत्र और स्पष्ट उदाहरण प्रदान करती है।

चरण 3: निष्कर्ष दो उदाहरण हैं: 'कहै कछु' में क् की तथा 'दैबेको दोऊ' में द् की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

त्वरित सुझाव: हर चुने हुए उदाहरण के बाद समान व्यंजन भी लिखिए; केवल तुकांत शब्द देना पर्याप्त नहीं है।

8(ख). काव्यांश के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा के लोकप्रचलित रूप, शब्द-संपदा और लय का परीक्षण किया जाता है।
- भाषिक विशेषता के साथ पद्यांश से उसका उदाहरण देना चाहिए।

चरण 1: भाषा और शब्दावली काव्यांश की भाषा ब्रजभाषा है। 'गुलामु', 'खैबो', 'सोइबो', 'लैबेको' और 'दैबेको' जैसे रूप उसकी लोकसुलभता तथा बोलचाल की सहजता प्रकट करते हैं। 'गुलामु' और 'मसीत' जैसे अरबी-फारसी मूल के प्रचलित शब्द भाषा को स्वाभाविक और व्यापक जनजीवन से जुड़ा बनाते हैं।

चरण 2: शैली और ध्वनि-सौंदर्य कथन सीधा, संक्षिप्त और निर्भीक है। 'लैबेको एकु न दैबेको दोऊ' में लोककथन जैसी सहज प्रभावशीलता है, जिससे निर्लिप्तता मुखर होती है। 'कहै कछु' तथा 'दैबेको दोऊ' में अनुप्रास और पूरे कथन की सधी हुई लय श्रुतिमाधुर्य बढ़ाते हैं। इस प्रकार सहज लोकभाषा में स्वाभिमान और रामभक्ति का दृढ़ स्वर व्यक्त होता है।

चरण 3: निष्कर्ष ब्रजभाषा, लोकप्रचलित शब्द, सहज मुहावरेदार कथन, अनुप्रास और लय इस काव्यांश के भाषिक सौंदर्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा का नाम बताकर दो वास्तविक शब्द-रूप और एक ध्वनि या शैली संबंधी विशेषता का प्रमाण दीजिए।

8(ग). काव्यांश का भाव-वैशिष्ट्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि का आत्मविश्वास राम के प्रति पूर्ण समर्पण से उत्पन्न होता है।
- लोकनिंदा की उपेक्षा और सांसारिक लेन-देन से दूरी मुख्य भाव हैं।

चरण 1: राम के प्रति समर्पण तुलसी स्वयं को राम का प्रसिद्ध सेवक कहते हैं। उनकी पहचान और आत्मगौरव का आधार रामभक्ति है। इसलिए कोई उनके बारे में अपनी इच्छा से कुछ भी कहे, वे विचलित नहीं होते। 'जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ' में लोकनिंदा के प्रति उपेक्षा तथा अपने विश्वास पर अडिग रहने का भाव प्रकट होता है।

चरण 2: सरल जीवन और निर्लिप्तता माँगकर भोजन करने और मसीत में सो जाने की बात से उनकी आवश्यकताओं की सीमितता तथा सांसारिक प्रतिष्ठा से अनासक्ति व्यक्त होती है। 'लैबेको एकु न दैबेको दोऊ' बताता है कि उन्हें किसी से लेन-देन या स्वार्थ का संबंध नहीं रखना है। यह अकिंचन, स्वाभिमानी और स्वतंत्र भक्त का स्वर है जो राम के आश्रय में संतुष्ट है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में अनन्य रामभक्ति, स्वाभिमान, लोकनिंदा के प्रति उदासीनता, सादा जीवन और सांसारिक स्वार्थों से

निर्लिप्तता व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: भाव-वैशिष्ट्य में केवल अर्थ न दोहराइए; रामभक्ति, निर्भीकता और अनासक्ति को पंक्तियों से जोड़िए।

अथवा

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे घुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). प्रात नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के रंग को परिचित वस्तु से जोड़ने पर दृश्य स्पष्ट और सजीव बनता है।
- उपमा में किसी समान गुण के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है।

चरण 1: तुलना की पहचान कवि ने प्रातःकालीन आकाश की तुलना अत्यंत नीले शंख से की है। पंक्ति "प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे" में आकाश उपमेय तथा नीला शंख उपमान है। "जैसे" शब्द इस तुलना को सीधे व्यक्त करता है।

चरण 2: समानता और प्रभाव भोर के समय आकाश में गहरी नीलिमा दिखाई देती है। नीले शंख के रंग की समानता के कारण यह उपमा दी गई है। शंख का बिंब आकाश की निर्मल, शांत और सुंदर आभा को भी मूर्त करता है। इस परिचित वस्तु के सहारे पाठक उषाकाल के आकाश को अपनी आँखों के सामने देख पाता है। इस तुलना में आकाश के आकार की अपेक्षा उसके रंग पर विशेष बल है। अतः उत्तर में नीलिमा को समानता का मुख्य आधार बताना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रातःकालीन नभ अपनी गहरी नीलिमा और निर्मल सौंदर्य के कारण बहुत नीले शंख जैसा दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: तुलना बताते समय उपमान का नाम और आकाश से उसकी रंग-समानता दोनों स्पष्ट कीजिए।

8(ख). काव्यांश में चित्रित परिवेश के वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में भोर के बदलते रंगों का दृश्यात्मक चित्रण है।
- घरेलू वस्तुओं के बिंब प्राकृतिक सौंदर्य को आत्मीय और परिचित बनाते हैं।

चरण 1: प्राकृतिक परिवेश काव्यांश में सूर्योदय से पहले के शांत, ताजगी भरे और रंग बदलते आकाश का चित्र है। आरंभ में वह गहरे नीले शंख जैसा दिखाई देता है। फिर राख से लीपे हुए गीले चौके का बिंब उसकी धूसर, नम और स्वच्छ आभा का अनुभव कराता है।

चरण 2: ग्रामीण और घरेलू आत्मीयता चौका, सिल, केसर, स्लेट और लाल खड़िया जैसी सामान्य वस्तुएँ इस परिवेश को घरेलू तथा आत्मीय बनाती हैं। काली सिल में थोड़ा लाल केसर घुलने और स्लेट पर लाल खड़िया मलने के बिंब अँधेरे आकाश में उभरती लालिमा को दिखाते हैं। इस प्रकार प्रकृति का विराट दृश्य साधारण जीवन के रंगों से जुड़ जाता है। इन बिंबों में ग्रामीण जीवन की सादगी और सहज सौंदर्य भी झलकता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह भोर का शांत, निर्मल और परिवर्तनशील परिवेश है, जिसे घरेलू जीवन के परिचित बिंबों ने सजीव और आत्मीय बनाया है।

त्वरित सुझाव: परिवेश की चर्चा में नीला, धूसर और लाल रंगों के क्रम को घरेलू बिंबों से जोड़िए।

8(ग). पद्यांश के भाषिक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सरल बोलचाल की भाषा भी नवीन बिंबों के कारण प्रभावपूर्ण काव्यभाषा बनती है।
- उपमा और दृश्य बिंब रंगों के परिवर्तन को पाठक के अनुभव में उतारते हैं।

चरण 1: शब्दावली और बिंब पद्यांश की भाषा सहज और चित्रात्मक है। "राख", "चौका", "सिल", "केसर", "स्लेट" और "खड़िया" जैसे परिचित शब्द भोर के सूक्ष्म सौंदर्य को व्यक्त करते हैं। दैनिक जीवन की इन वस्तुओं से बना चित्र पाठक को दृश्य का प्रत्यक्ष अनुभव कराता है।

चरण 2: अलंकार और अभिव्यक्ति "नीला शंख जैसे" में उपमा है। "कि जैसे घुल गई हो" तथा खड़िया मलने की कल्पना आकाश की लालिमा को सजीव करती है। नीले, काले और लाल रंगों का संयोजन दृश्य सौंदर्य बढ़ाता है। छोटी-बड़ी मुक्तछंद की पंक्तियाँ और "अभी गीला पड़ा है" जैसा सहज कथन भाषा में स्वाभाविकता तथा आत्मीयता लाते हैं। इससे दृश्य स्पष्ट होने के साथ भावों की कोमलता भी बनी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल शब्दावली, नवीन घरेलू बिंब, उपमा और मुक्तछंद की सहज लय इस पद्यांश के प्रमुख भाषिक सौंदर्य हैं।

त्वरित सुझाव: भाषिक सौंदर्य के प्रत्येक गुण के साथ पद्यांश का एक छोटा और सटीक उदाहरण दीजिए।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर चिड़िया के परों में चंचलता और कवि के पदों की शिथिलता के कारणों पर विचार करते हुए कविता के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रियजनों का आकर्षण जीवन में उत्साह और गति पैदा करता है।
- पक्षियों और कवि की विपरीत मन:स्थितियाँ कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट करती हैं।

चरण 1: चिड़िया के परों की चंचलता संध्या होने पर चिड़िया के बच्चे नीड़ों में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हें भोजन और माँ के स्नेह की आवश्यकता है। बच्चों की याद तथा उनके पास शीघ्र पहुँचने की इच्छा चिड़िया के परों में चंचलता भर देती है। दिन के ढलने का बोध उसकी गति को बढ़ाता है, क्योंकि उसके लौटने का एक निश्चित उद्देश्य है।

चरण 2: कवि के पदों की शिथिलता कवि के मन में प्रश्न उठता है कि उसके आने की प्रतीक्षा कौन कर रहा है और वह किसके लिए शीघ्र चले। चिड़िया के विपरीत उसे अपने लिए उत्सुक प्रतीक्षा करने वाला प्रियजन दिखाई नहीं देता। इस अकेलेपन और अपनत्व के अभाव से उसका उत्साह घटता है और कदम शिथिल पड़ जाते हैं। समय का बीतना उसके मन को और व्याकुल करता है।

चरण 3: कविता का प्रतिपाद्य कविता यह स्पष्ट करती है कि समय निरंतर बीत रहा है और जीवन की अवधि सीमित है। इसी समय-बोध के बीच प्रेम और आत्मीय संबंध प्राणी को सक्रिय बनाते हैं। किसी की प्रतीक्षा और उससे मिलने की चाह जीवन को लक्ष्य देती है; उसका अभाव गति को मंद कर देता है। पक्षी और कवि की तुलना से समय की क्षणभंगुरता तथा मानवीय संबंधों की प्रेरक शक्ति व्यक्त होती है।

चरण 4: निष्कर्ष चिड़िया बच्चों के स्नेह से उत्साहित है, जबकि कवि प्रतीक्षा करने वाले प्रियजन के अभाव में शिथिल है। कविता समय-बोध और आत्मीय संबंधों की जीवनदायी शक्ति को व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: दोनों की गति का कारण अलग लिखकर अंत में प्रेम, प्रतीक्षा और बीतते समय को प्रतिपाद्य से जोड़िए।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सही बात का सही शब्द से जुड़ना' क्यों ज़रूरी है ? ऐसा न होने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं ? 'बात सीधी थी, पर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सार्थक अभिव्यक्ति के लिए भाव के अनुरूप सहज और सटीक भाषा आवश्यक है।
- भाषा को अनावश्यक जटिल बनाने से मूल बात की स्पष्टता और प्रभाव नष्ट हो सकते हैं।

चरण 1: सही शब्द का महत्व सही बात तभी पूरी तरह संप्रेषित होती है जब उसके लिए उपयुक्त शब्द चुना जाए। शब्द को भाव के अर्थ, संदर्भ और सहजता के अनुरूप होना चाहिए। ऐसा होने पर पाठक बात को बिना उलझन समझता है और उसका प्रभाव ग्रहण करता है। केवल सुंदर या कठिन शब्द लगा देने से अभिव्यक्ति सफल नहीं हो जाती।

चरण 2: कविता में भाषा की उलझन कविता में आरंभिक बात सीधी थी, किंतु कवि ने उसे प्रभावशाली बनाने के प्रयास में भाषा के पेच में उलझा दिया। सहज कथ्य को अनावश्यक ढंग से मोड़ने पर वह अपना सीधापन खो बैठा। उसे फिर सरल करने की कोशिश भी निष्फल होने लगी। यह अनुभव बताता है कि भाषा पर अत्यधिक जोर देने से मूल भाव पीछे छूट सकता है।

चरण 3: असंगति के दुष्परिणाम अनुपयुक्त शब्दों और कृत्रिम भाषा से अर्थ अस्पष्ट होता है, सहज संप्रेषण रुकता है और कथ्य का स्वाभाविक प्रभाव समाप्त हो जाता है। तब रचना जीवन से जुड़ी अनुभूति के स्थान पर शब्दों का प्रदर्शन बन जाती है। इसलिए कवि को भाषिक चमत्कार के आकर्षण से बचकर भाव और भाषा के उचित मेल पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष सही शब्द भाव को स्पष्ट और प्रभावी बनाता है। उसके अभाव में सीधी बात उलझ जाती है और रचना अपनी सहजता, अर्थवत्ता तथा संप्रेषणीयता खो देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भाव-शब्द का संबंध, कविता की उलझन और संप्रेषण पर उसका प्रभाव क्रम से लिखिए।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पेट की आग राम-भक्ति के मेघ से ही शान्त हो सकती है – तुलसी की रचना की पृष्ठभूमि में तत्कालीन सामाजिक दशा पर टिप्पणी कीजिए ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की रचना तत्कालीन जनजीवन में व्याप्त आर्थिक अभाव और असुरक्षा को सामने लाती है।
- पेट की आग भूख की तीव्र पीड़ा का तथा राम-भक्ति के मेघ आश्रय और शांति का रूपक हैं।

चरण 1: तत्कालीन आर्थिक दशा तुलसी के समय साधारण जनता जीविका के संकट से जूझ रही थी। किसान खेती से वंचित था, भिखारी को भीख नहीं मिलती थी, व्यापारी का व्यापार ठप था और सेवक को काम नहीं मिलता था। विभिन्न व्यवसायों से जुड़े लोग

जीवन-निर्वाह का उपाय खोज रहे थे। जीविका का आधार टूट जाने से समाज में दीनता, चिंता और असहायता बढ़ गई थी।

चरण 2: भूख की विकरालता पेट भरने की विवशता मनुष्य को उचित-अनुचित हर प्रकार का काम करने के लिए बाध्य करती थी। लोग अपनी कला, श्रम और कौशल का उपयोग भी पेट की आवश्यकता पूरी करने के लिए करते थे। स्थिति इतनी कठोर थी कि संतान तक बेचने की नौबत आ जाती थी। इसलिए कवि पेट की आग को अत्यंत भयंकर बताता है; यह केवल व्यक्तिगत भूख नहीं, व्यापक सामाजिक दुर्दशा की अभिव्यक्ति है।

चरण 3: राम-भक्ति का आश्रय ऐसी निरुपाय दशा में तुलसी राम की करुणा को अंतिम सहारा मानते हैं। आग को शांत करने वाले मेघ की तरह राम की कृपा और भक्ति पीड़ित मनुष्य को आश्रय तथा शांति दे सकती है। यह कथन कवि की धार्मिक आस्था के साथ तत्कालीन व्यवस्था से निराश जनता की पीड़ा को भी प्रकट करता है।

चरण 4: निष्कर्ष तत्कालीन समाज भूख, बेरोजगारी और जीविका के संकट से त्रस्त था। तुलसी ने इस विकराल पेट की आग के सामने राम की करुणा और भक्ति को अंतिम आश्रय माना है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक दशा के लिए किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक के जीविका-संकट के उदाहरण दीजिए।

---

10. जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है । जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की । उचित भी था क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशुंडि जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं । छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया । जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते; वह मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथतीं ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). भक्तिन जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख क्यों न प्राप्त कर सकी ? उसके सुखाभाव के कारणों पर तर्कसहित विचार कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में पुत्र और पुत्री के आधार पर होने वाले भेदभाव तथा श्रम के असमान वितरण को पहचानना आवश्यक है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: पुत्रियों के जन्म पर उपेक्षा भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया था। पुत्रों को ही परिवार की प्रतिष्ठा और कमाई का आधार मानने वाली सास तथा जिठानियों ने इस कारण उसके प्रति उपेक्षा प्रकट की। यह उसकी किसी गलती का परिणाम नहीं, परिवार की संकीर्ण पुत्रप्रधान मानसिकता का परिणाम था।

चरण 2: श्रम का अन्यायपूर्ण बोझ जिठानियाँ बैठकर बातें करती थीं, जबकि भक्तिन मट्ठा फेरने, कूटने, पीसने और भोजन पकाने जैसे काम करती थी। उसकी छोटी बेटियों को भी गोबर उठाना और कंडे पाथना पड़ता था। इस प्रकार सम्मान के अभाव और लगातार कठोर श्रम ने उसके जीवन को दुखमय बना दिया।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन को बेटियों की माँ होने के कारण तिरस्कार और असमान श्रम-विभाजन सहना पड़ा; इसलिए जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी उसे सुख नहीं मिला।

त्वरित सुझाव: सुखाभाव समझाते समय बेटियों के जन्म से उपजी उपेक्षा और काम के असमान बोझ, दोनों को जोड़िए।

10(ख). भक्तिन की सास और जिठानियों के पारिवारिक सम्मान-प्राप्ति का क्या कारण था तथा भक्तिन के प्रति उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में स्त्रियों की प्रतिष्ठा को उनके पुत्रों की संख्या से जोड़ने वाली पारिवारिक व्यवस्था पर व्यंग्य है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: सम्मान का आधार सास तीन कमाऊ बेटों की माँ थी; इसलिए वह परिवार की वरिष्ठ और प्रतिष्ठित स्त्री बनी बैठी थी। दोनों जिठानियाँ भी पुत्रों को जन्म देकर उसी सम्मानपूर्ण पद की दावेदार थीं। उनका सम्मान किसी विशेष गुण से नहीं, पुत्रों की माता होने से जुड़ा था।

चरण 2: भक्तिन के प्रति व्यवहार भक्तिन के यहाँ पहली बेटी के बाद दो और बेटियाँ हुईं तो सास और जिठानियों ने होंठ बिचकाकर उपेक्षा जताई। उन्होंने उसे घर के कठिन कामों में लगाए रखा और उसकी छोटी बेटियों से भी काम करवाया, जबकि जिठानियाँ स्वयं बैठकर बातें करती रहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सास और जिठानियों को पुत्रों के कारण सम्मान मिला; तीन बेटियों की माँ भक्तिन के प्रति उनका व्यवहार उपेक्षापूर्ण और कठोर हो गया।

त्वरित सुझाव: सम्मान का कारण लिखते हुए पुत्रजन्म की रूढ़ि स्पष्ट कीजिए और व्यवहार के लिए गद्यांश के कामों का उदाहरण दीजिए।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए – "छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के शाब्दिक अर्थ के साथ लेखिका का व्यंग्य और सामाजिक आलोचना भी समझनी चाहिए।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: लीक का संदर्भ यहाँ लीक से आशय परिवार में पुत्रों को जन्म देने की अपेक्षित परंपरा है। सास और जिठानियों के पुत्र थे, लेकिन छोटी बहू भक्तिन की तीन बेटियाँ थीं। इसी को परिवार ने लीक छोड़ना मान लिया, मानो संतान के लिंग का निर्णय स्वयं माँ करती हो।

चरण 2: दंड और व्यंग्य इस तथाकथित अपराध के लिए भक्तिन को उपेक्षा और लगातार कठिन घरेलू श्रम सहना पड़ा। उसकी बेटियों को भी गोबर उठाने और कंडे पाथने पड़े। लेखिका दंड को आवश्यक कहकर उसका समर्थन नहीं करतीं; वे इस अन्यायी और पुत्रप्रधान सोच पर तीखा व्यंग्य करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि बेटियाँ जन्म देने के कारण निर्दोष भक्तिन को दंडित किया गया; लेखिका ने इस अमानवीय रूढ़ि की व्यंग्यपूर्वक निंदा की है।

त्वरित सुझाव: यहाँ आवश्यक शब्द को लेखिका की सहमति न मानिए; पुत्रप्रधान मानसिकता पर छिपे व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

10(घ). भक्तिन और उसकी दोनों नन्हीं लड़कियों को पारिवारिक दण्ड किस रूप में भोगना पड़ा ? इस दण्ड के औचित्य-अनौचित्य के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में पहले गद्यांश में वर्णित दंड बताना और फिर समानता तथा मानवीयता के आधार पर उसका मूल्यांकन करना है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: दंड का रूप भक्तिन को मट्ठा फेरने, कूटने, पीसने और भोजन पकाने का भारी घरेलू श्रम करना पड़ता था। उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं और कंडे पाथती थीं। दूसरी ओर जिठानियाँ बैठकर लोकचर्चा करती थीं और उनके लड़के खेलते-धूल उड़ाते थे।

चरण 2: दंड की अनुचितता यह दंड पूरी तरह अनुचित था, क्योंकि बेटियों का जन्म कोई अपराध नहीं है। माँ और बालिकाओं के साथ केवल इसी कारण भेदभाव करना अन्याय है। छोटे बच्चों से कठिन काम कराना और पुत्रों को छूट देना परिवार की असमान व्यवस्था तथा संवेदनहीनता को दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन और उसकी बेटियों ने उपेक्षा तथा कठिन श्रम के रूप में दंड भोगा। लिंगभेद पर आधारित यह दंड नैतिक और मानवीय, दोनों दृष्टियों से अनुचित था।

त्वरित सुझाव: दंड के उत्तर में माँ और बेटियों के काम अलग-अलग बताइए, फिर पुत्रियों के जन्म को अपराध मानने की सोच का विरोध कीजिए।

अथवा

10. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख़याल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पन्दन-शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). रात्रि की विभीषिका कैसी थी ? ढोलक किस रूप में उसको चुनौती देती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में महामारी से उत्पन्न भय और उस भय के सामने कला से मिलने वाले मानसिक बल का विरोध दिखाया गया है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: रात्रि का भयावह रूप गाँव में महामारी ने लोगों को अत्यंत दुर्बल और मृतप्राय बना दिया था। उनके पास औषधि, उपचार और उचित भोजन की सुविधा भी नहीं थी। ऐसे में रात रोग, मृत्यु की आशंका और असहायता के कारण भयावह अनुभव होती थी। गद्यांश की विभीषिका इसी सामूहिक भय को व्यक्त करती है।

चरण 2: ढोलक की चुनौती पहलवान संध्या से सुबह तक ढोलक बजाता था। उसकी ध्वनि भयावह वातावरण में साहस और जीवन की चेतना जगाती थी। उसे सुनकर लोगों की आँखों में दंगल का दृश्य उभरता और निष्क्रिय स्नायुओं में भी बिजली-सी दौड़ जाती थी। यह चुनौती मानसिक और भावनात्मक थी।

चरण 3: निष्कर्ष रात महामारी और मृत्यु के भय से भरी थी; ढोलक की निरंतर ध्वनि लोगों में उत्साह तथा निर्भयता भरकर उस विभीषिका को चुनौती देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक की चुनौती को मनोबल से जोड़िए; उसे महामारी मिटाने वाली चिकित्सा न बताइए।

10(ख). दंगल का दृश्य किस-किसमें किन रूपों में उपयोगी होता था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल का दृश्य यहाँ प्रत्यक्ष आयोजन नहीं, ढोलक की ध्वनि से दुर्बल ग्रामीणों के मन में जागने वाली स्मृति है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: किसमें और किस रूप में प्रभाव ढोलक सुनकर गाँव के बूढ़ों, बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। वे सभी बीमारी और अभाव से दुर्बल थे। इस स्मृति से उनके मन में पहलवानों के संघर्ष, शक्ति और उत्साह का अनुभव फिर जीवित हो उठता था।

चरण 2: उपयोगिता का कारण दंगल की जीवंत स्मृति निराशा के बीच साहस जगाती थी और स्पंदनहीन-से स्नायुओं में बिजली दौड़ने जैसा अनुभव कराती थी। बीमारी दूर न होने पर भी लोगों को मानसिक संबल मिलता था। इससे वे मृत्यु के भय से कुछ मुक्त होकर संकट का सामना कर पाते थे।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल की स्मृति बूढ़ों, बच्चों और जवानों में उत्साह, स्फूर्ति तथा साहस जगाती थी; इसलिए रोग और निराशा से घिरे लोगों के लिए वह उपयोगी थी।

त्वरित सुझाव: किस-किसमें के लिए बूढ़े, बच्चे और जवान लिखिए; उपयोगिता को उत्साह और मृत्यु-भय से मुक्ति से जोड़िए।

10(ग). ढोलक की आवाज़ औषध-गुण-हीन होकर भी मृतप्रायों पर क्या प्रभाव डालती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश शारीरिक उपचार और मनोबल के बीच अंतर स्पष्ट करता है; ढोलक की भूमिका मानसिक संजीवनी की है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: औषधीय शक्ति का अभाव ढोलक की आवाज में न बुखार हटाने का गुण था और न महामारी की विनाशकारी शक्ति को रोकने की क्षमता। इसलिए उसकी उपयोगिता को रोग के वास्तविक इलाज के रूप में नहीं समझना चाहिए। लेखक यह सीमा स्वयं स्पष्ट करता है।

चरण 2: मृतप्राय लोगों पर प्रभाव फिर भी उसकी आवाज अत्यंत दुर्बल लोगों में संजीवनी-सी शक्ति भरती थी। दंगल की स्मृति से उनमें उत्साह और स्फूर्ति जागती थी। इस प्रकार ध्वनि उनका मानसिक सहारा बनती थी। सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव यह था कि उनका मृत्यु-भय कम हो जाता था और आँख मूँदते समय वे मानसिक आतंक से मुक्त रहते थे।

चरण 3: निष्कर्ष औषधीय गुण न होने पर भी ढोलक मृतप्राय लोगों में साहस और जीवन-चेतना जगाती थी तथा उन्हें मृत्यु के भय से मुक्ति देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले ढोलक की चिकित्सकीय सीमा बताइए, फिर उत्साह और निर्भयता के सकारात्मक प्रभाव लिखिए।

10(घ). 'औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन' तथा 'स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं' का अर्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ बताते समय संयुक्त पद के घटकों को खोलना और गद्यांश में उनकी स्थिति से अर्थ जोड़ना आवश्यक है।
- उत्तर में गद्यांश के स्पष्ट संकेतों को आधार बनाकर कारण और प्रभाव का संबंध स्थापित करना चाहिए।

चरण 1: औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन का अर्थ औषधि का अर्थ दवा, उपचार का अर्थ रोग दूर करने का इलाज और पथ्य का अर्थ रोगी के अनुकूल उचित आहार है। विहीन का अर्थ इन सुविधाओं से रहित होना है। यह पद ऐसे ग्रामीणों के लिए आया है जिन्हें दवा, इलाज और बीमारी के अनुसार भोजन उपलब्ध नहीं था।

चरण 2: स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं का अर्थ स्पन्दन गति अथवा हलचल को कहते हैं। इस पद से आशय ऐसे अत्यंत दुर्बल स्नायुओं से है जिनमें हिलने-डुलने या सक्रिय होने की शक्ति मानो समाप्त हो गई हो। रोग और कमजोरी की इस दशा के बावजूद ढोलक सुनकर उनमें स्फूर्ति का अनुभव होता था।

चरण 3: निष्कर्ष पहला पद दवा, इलाज और रोगानुकूल आहार के अभाव को व्यक्त करता है; दूसरा पद अत्यधिक कमजोरी से लगभग निष्क्रिय हुए स्नायुओं की दशा बताता है।

त्वरित सुझाव: पथ्य का अर्थ केवल भोजन नहीं, रोगी के लिए उपयुक्त आहार है; शून्य स्नायु की दशा को कमजोरी के संदर्भ में समझाइए।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन समाज में किन समस्याओं का कारण रहा है ? आधुनिक समय में इस दिशा में क्या परिवर्तन हुआ है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जाति पर आधारित व्यवसाय व्यक्ति की रुचि और योग्यता के स्थान पर जन्म से निर्धारित होता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के मुख्य विचार से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जाति-व्यवस्था की समस्याएँ डॉ. आंबेडकर के अनुसार जाति-प्रथा केवल श्रम का विभाजन नहीं, श्रमिकों का भी विभाजन करती है। वह काम करने वालों को ऊँच-नीच की श्रेणियों में बाँटती है। व्यक्ति को अपनी रुचि, दक्षता तथा क्षमता के अनुकूल व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती; उसे पैतृक काम अपनाना पड़ता है। किसी पेशे को हीन समझे जाने पर उससे जुड़े व्यक्ति को सामाजिक अपमान सहना पड़ता है। इससे श्रम के प्रति अरुचि, काम में अकुशलता और समाज में असमानता बढ़ती है।

चरण 2: आधुनिक परिस्थितियों में परिवर्तन आधुनिक उद्योग और तकनीक के कारण व्यवसायों का स्वरूप तेजी से बदलता है। पुराने काम समाप्त होते हैं और नए काम पैदा होते हैं। ऐसी स्थिति में पेशा बदलने की स्वतंत्रता आवश्यक है; जन्म से बँधा व्यवसाय बेरोजगारी और भूख का कारण बन सकता है। आधुनिक समय में शिक्षा, प्रशिक्षण और नए रोजगारों ने योग्यता के आधार पर काम चुनने की संभावनाएँ बढ़ाई हैं तथा परंपरागत बंधन ढीले हुए हैं। फिर भी जातिगत भेद पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। पाठ का आग्रह है कि सामाजिक व्यवस्था प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करने और आवश्यकतानुसार व्यवसाय बदलने का अवसर दे।

चरण 3: निष्कर्ष जन्म पर आधारित श्रम-विभाजन असमानता, अकुशलता और बेरोजगारी बढ़ाता है; आधुनिक समाज में स्वतंत्र व्यवसाय-चयन और योग्यता को महत्त्व देना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रम-विभाजन और श्रमिकों के ऊँच-नीच वाले विभाजन का अंतर स्पष्ट करके आधुनिक व्यवसायों की परिवर्तनशीलता जोड़ें।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'शिरीष का फूल संघर्ष-भरे जीवन में भी जीवन्त बने रहने की सीख देता है ।' उपयुक्त तर्क देकर प्रतिपादित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष की कोमलता और प्रतिकूल मौसम में खिलने की क्षमता जीवन-दृष्टि का प्रतीक है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के मुख्य विचार से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रतिकूलता में भी उल्लास हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध में शिरीष उस समय भी फूलता है जब भीषण गर्मी और लू से धरती तप रही होती है। बाहर की कठोर परिस्थिति उसके फूलों की कोमलता और सौंदर्य को नष्ट नहीं कर पाती। वह विपरीत मौसम में भी अपनी सहज प्रसन्नता बनाए रखता है। इस प्रकार वह मनुष्य को संकट से हारकर निराश होने के बजाय अपनी सृजनशीलता और जीवन के प्रति विश्वास बचाए रखने की प्रेरणा देता है। उसका खिलना संघर्ष के बीच जीवन की स्वीकृति है।

चरण 2: अनासक्ति और भीतर की शक्ति शिरीष वातावरण से जीवन-रस खींचकर अपना अस्तित्व बनाए रखता है। लेखक उसे अनासक्त जीवन का उदाहरण मानते हैं: वह कठिनाइयों से परिचित रहते हुए भी उनके बोझ से दब नहीं जाता। उसकी मस्ती पलायन नहीं, भीतर की दृढ़ता है। मनुष्य को भी बाहरी संकटों के बीच मन की कोमलता, दूसरों के प्रति संवेदना और कर्म की शक्ति सुरक्षित रखनी चाहिए। लेखक कबीर की फक्कड़ता और गांधीजी की कठिन परिस्थितियों में अडिग जीवन-दृष्टि में इसी प्रकार की शक्ति देखते हैं। शिरीष सिखाता है कि संघर्ष हमारी मनुष्यता और आनंद को समाप्त करने का कारण न बने।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष कठिन वातावरण में खिलकर धैर्य, अनासक्ति और उल्लास के साथ सक्रिय रहने की सीख देता है।

त्वरित सुझाव: फूल की कोमलता को कमजोरी न बताएँ; भीषण गर्मी में उसका खिलना आंतरिक दृढ़ता और जीवंतता का प्रमाण बनाएँ।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी भारत-पाक के विस्थापित पुनर्वासित लोगों के दिलों को टटोलने वाली कहानी है – उदाहरणों के आधार पर पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विभाजन से बनी राजनीतिक सीमाएँ स्मृतियों और आत्मीय संबंधों को पूरी तरह नहीं बाँट सकतीं।
- उत्तर में पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के मुख्य विचार से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: सिख बीबी की जन्मभूमि की स्मृति रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में सिख बीबी भारत में पुनर्वासित हो चुकी हैं, लेकिन लाहौर से उनका भावनात्मक लगाव बना हुआ है। वे सफिया से लाहौरी नमक लाने को कहती हैं। साधारण-सा नमक उनके लिए पुराने घर, परिचित स्वाद और अपनी जन्मभूमि की स्मृति का प्रतीक है। नई जगह बस जाने पर भी उनका मन बीते जीवन से जुड़ा रहता है। यह प्रसंग दिखाता है कि विस्थापन केवल संपत्ति और स्थान का परिवर्तन नहीं, आत्मीय परिवेश से बिछुड़ने की पीड़ा भी है।

चरण 2: सीमा के दोनों ओर समान आत्मीयता नमक ले जाने के प्रसंग में सफिया की भेंट सीमा-शुल्क अधिकारियों से होती है। पाकिस्तानी अधिकारी दिल्ली को अपना वतन मानता है और भारतीय अधिकारी ढाका की स्मृति से जुड़ा है। दोनों के जीवन में वर्तमान निवास और भावनात्मक जन्मभूमि अलग-अलग हैं। सिख बीबी की इच्छा जानकर नियमों के बीच भी मानवीय संवेदना उभरती है। इस प्रकार कहानी किसी एक समुदाय की पीड़ा तक सीमित नहीं रहती। अलग-अलग धर्मों और देशों में बसे लोग अपनी छूटी हुई धरती को एक जैसी आत्मीयता से याद करते हैं। नमक इस साझा स्मृति और मानवीय रिश्ते को जोड़ने वाला माध्यम बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी सिख बीबी तथा सीमा-शुल्क अधिकारियों के माध्यम से दिखाती है कि पुनर्वास के बाद भी जन्मभूमि की स्मृति और मानवीय अपनापन जीवित रहते हैं।

त्वरित सुझाव: तीन उदाहरण जोड़ें: सिख बीबी का लाहौर, पाकिस्तानी अधिकारी की दिल्ली और भारतीय अधिकारी का ढाका से लगाव।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अभाव और संघर्ष कलाकार की संवेदना तथा जीवन को देखने की दृष्टि को गहरा कर सकते हैं।
- उत्तर में पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के मुख्य विचार से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: बचपन के अभावों से संवेदनशीलता चार्ली चैप्लिन का बचपन गरीबी, असुरक्षा और पारिवारिक कठिनाइयों में बीता। माँ की बीमारी तथा जीवन-निर्वाह की परेशानियों ने उन्हें अभावग्रस्त मनुष्य की विवशता को निकट से समझने का अवसर दिया। इसलिए उनकी कला में गरीब और कमजोर व्यक्ति केवल हँसी का पात्र नहीं बनता; उसके दुःख और सम्मान की चिंता भी उपस्थित रहती है। भूख, अपमान और अकेलेपन के अनुभवों ने उनके व्यक्तित्व को करुणा तथा दूसरों की पीड़ा पहचानने की क्षमता से समृद्ध किया।

चरण 2: दुःख को हास्य में बदलने की शक्ति जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली को हार मान लेने के बजाय कठिन परिस्थिति में भी जीने की जिद दी। वे अपने ऊपर हँस सकने और दयनीय स्थिति में भी हास्य खोज सकने की विलक्षण क्षमता विकसित कर सके। उनकी फिल्मों का साधारण, ठोकरें खाता व्यक्ति परिस्थितियों से दबता है, फिर भी पूरी तरह टूटता नहीं। दर्शक उसकी हरकतों पर हँसते हुए अपने जीवन का दुःख भी पहचानता है। इसीलिए चार्ली के हास्य में करुणा मिली हुई है। उनके संघर्ष ने अभिनय को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे आम आदमी के अनुभवों की अभिव्यक्ति बनाया। यही अनुभव उनकी कला को व्यापक मानवीय अर्थ देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संघर्ष ने चार्ली को करुणा, आत्मपरिहास, जीवट और साधारण मनुष्य से गहरी आत्मीयता दी; इन्हीं से उनका व्यक्तित्व और कला संपन्न हुए।

त्वरित सुझाव: चार्ली के जीवन के अभावों को उनकी फिल्मों की करुणा और हास्य से जोड़ें; केवल संघर्षों की सूची देना पर्याप्त नहीं है।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया ? इस विषय में लेखक की प्रतिक्रिया को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ लोकविश्वास और तर्कशील दृष्टि के बीच संवाद तथा त्याग की भावना को सामने रखता है।
- उत्तर में पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के मुख्य विचार से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीजी द्वारा लोकाचार का समर्थन जीजी इन्दर सेना के लड़कों को इंद्र का दूत मानती थीं। उनके अनुसार पानी माँगने आए इन बच्चों पर पानी डालना व्यर्थ करना नहीं, वर्षा की कामना से किया गया दान है। अभाव में भी अपना थोड़ा-सा पानी दूसरों को देना त्याग है। वे समझाती थीं कि दान तभी सार्थक है जब मनुष्य प्रिय और आवश्यक वस्तु भी दे सके। किसान भी फसल पाने के लिए पहले अच्छे बीज खेत में डालता है; उसी प्रकार थोड़ा पानी अर्पित करके बहुत-से पानी की आशा की जाती है। इस तर्क में प्रकृति से लेने के पहले उसे कुछ देने की भावना है।

चरण 2: लेखक की तर्कपूर्ण असहमति लेखक का आरंभिक दृष्टिकोण इससे भिन्न था। वे ऐसे लोकाचार को अंधविश्वास मानते थे और प्रश्न करते थे कि जिस समय पीने के पानी का अकाल हो, उस समय बचे हुए पानी को लड़कों पर उड़ेलना कैसे उचित हो सकता है। उन्हें इसमें पानी की बरबादी और पाखंड दिखाई देता था। जीजी उनके तर्क का उत्तर विश्वास, दान और त्याग की भावना से देती थीं। लेखक की बुद्धि उस मान्यता को सहज स्वीकार नहीं करती थी, पर जीजी की ममता तथा उदारता उन्हें प्रभावित करती थी। इसलिए प्रसंग में केवल उपहास नहीं, लोकजीवन के भावनात्मक आधार और लेखक की तार्किक आपत्ति, दोनों उपस्थित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने इसे इंद्र के लिए दान और त्याग मानकर उचित ठहराया, जबकि लेखक ने पानी के अभाव में इसे बरबादी मानकर तर्कपूर्ण विरोध किया।

त्वरित सुझाव: जीजी के दान और बीज वाले तर्क के साथ लेखक का जल-संकट वाला विरोध अवश्य लिखें; दोनों दृष्टियों को अलग स्पष्ट करें।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैसे कहा जा सकता है कि आत्मकथा का 'जूझ' शीर्षक, कथा-नायक की केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मकथा का शीर्षक नायक के जीवन-संघर्ष और उसके व्यक्तित्व की प्रधान विशेषता का संकेत करता है।
- आनंद का संघर्ष परिस्थितियों से हार मानने के स्थान पर शिक्षा और सृजन का मार्ग बनाने में प्रकट होता है।

चरण 1: पढ़ाई के लिए संघर्ष आनंद पढ़ना चाहता है, पर उसके पिता उसे विद्यालय भेजने के बजाय खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। घर की आर्थिक कठिनाइयाँ, पिता का कठोर व्यवहार और खेतों का श्रम उसकी शिक्षा में बाधा बनते हैं। फिर भी वह पढ़ाई की इच्छा नहीं छोड़ता। वह माँ और दत्ता जी राव देसाई की सहायता से पिता को मनाने का रास्ता खोजता है। विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी उसे खेती और पढ़ाई दोनों का दायित्व निभाना पड़ता है। यह प्रसंग उसके साहस और लक्ष्य के प्रति दृढ़ता को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विद्यालय और कविता के क्षेत्र में संघर्ष विद्यालय में लौटकर आनंद को अपनी पढ़ाई की कमी पूरी करनी पड़ती है। आरंभिक संकोच तथा साथियों के बीच अपनी स्थिति बनाने की कठिनाई के बावजूद वह मेहनत करता है। सौंदलगेकर मास्टर की कविता पढ़ाने की शैली उसके भीतर काव्य के प्रति रुचि जगाती है। वह कविताओं को गुनगुनाता है और स्वयं कविता बनाने का अभ्यास करता है। खेत का काम करते हुए भी उसका मन शब्द, लय और भाव के साथ सक्रिय रहता है। इस प्रकार उसका संघर्ष केवल विद्यालय पहुँचने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अपनी प्रतिभा पहचानने और उसे विकसित करने तक चलता है।

चरण 3: निष्कर्ष जूझ का अर्थ संघर्ष करना है। आनंद का शिक्षा पाने, बाधाओं से लड़ने और कवि के रूप में विकसित होने का निरंतर प्रयत्न उसकी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता है; इसलिए शीर्षक पूर्णतः सार्थक है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता लिखते समय पढ़ाई पाने और कवि बनने के दोनों संघर्षों को उदाहरण से जोड़िए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल क्यों रह जाते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की समय के साथ अनुकूलन की क्षमता उसके विचारों, व्यवहार और संबंधों से पहचानी जाती है।
- यशोधर बाबू पर किशनदा की जीवन-दृष्टि तथा पुराने सामूहिक और सादगीपूर्ण संस्कारों का गहरा प्रभाव है।

चरण 1: पुराने जीवन-मूल्यों से दृढ़ लगाव यशोधर बाबू के लिए पुराने परिचित संस्कार ही उचित जीवन की कसौटी हैं। किशनदा ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ा था, इसलिए वे बदलती परिस्थितियों को भी उन्हीं की दृष्टि से परखते हैं। वे सादगी, पारिवारिक मर्यादा, आत्मसंयम और सामाजिक मेल-जोल को महत्त्व देते हैं। नई पीढ़ी का रहन-सहन उन्हें सहज स्वीकार नहीं होता। हर नई बात पर संदेह करने और उसमें कुछ अनुचित खोजने की आदत उनके तथा परिवार के बीच दूरी बढ़ाती है।

चरण 2: परिवार के बदलते व्यवहार के उदाहरण बेटे भूषण की अच्छी आय और आधुनिक नौकरी उन्हें सहज प्रसन्नता देने के बजाय शंका में डालती है। बच्चे जिस उत्साह से उनके विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाते हैं, उस आयोजन को भी वे अपने संस्कारों के अनुरूप नहीं पाते। भूषण उन्हें ड्रेसिंग गाउन देता है और सुबह दूध लाते समय पहनने की बात कहता है; इस उपहार में उन्हें बेटे का स्नेह तो अनुभव होता है, साथ ही यह पीड़ा भी होती है कि बेटा स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी लेने की बात क्यों नहीं कहता। इस प्रसंग में आधुनिक उपहार-प्रधान व्यवहार और उनकी आत्मीय सेवा की अपेक्षा का अंतर स्पष्ट होता है। पत्नी और बच्चे बदलते समय को अपना लेते हैं, लेकिन वे मन से पुराने जीवन से जुड़े रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू पुराने आदर्शों को छोड़ नहीं पाते और नए व्यवहार को सहजता से समझ नहीं पाते। किशनदा के संस्कार, नई पीढ़ी के प्रति अविश्वास और भावनात्मक अकेलापन उनके अनुकूलन में बाधा बनते हैं।

त्वरित सुझाव: असफल अनुकूलन समझाते समय भूषण की नौकरी, वर्षगाँठ और ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग को मूल्य-संघर्ष से जोड़िए।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुअनजो-दड़ो सिन्धु घाटी-सभ्यता का एक नियोजित शहर था । उदाहरणों के आधार पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नियोजित नगर में आवास, आवागमन, जल-व्यवस्था और सार्वजनिक सुविधाएँ सुविचारित ढंग से व्यवस्थित होती हैं।
- मुअनजो-दड़ो के पुरातात्त्विक अवशेष सिंधु सभ्यता की नागरिक समझ तथा व्यवस्थित सामूहिक जीवन का प्रमाण हैं।

चरण 1: सड़कों तथा घरों की सुव्यवस्था मुअनजो-दड़ो की सड़कें और गलियाँ नियमित योजना के अनुसार बनी थीं। मुख्य मार्गों को काटती गलियाँ नगर को व्यवस्थित खंडों में बाँटती थीं। मकानों में आँगन, कमरे और स्नान की व्यवस्था मिलती है। घरों के दरवाजे प्रायः गलियों की ओर खुलते थे, जिससे मुख्य सड़कों का आवागमन प्रभावित नहीं होता था। निर्माण में पकी ईंटों का प्रयोग और बस्तियों की सुव्यवस्था बताते हैं कि शहर केवल बेतरतीब ढंग से बसे घरों का समूह नहीं था। निवासियों की सुविधा और नगर के साझा उपयोग का ध्यान रखा गया था।

चरण 2: जल-निकासी और सार्वजनिक निर्माण नगर में कुओं की उपलब्धता से जल-आपूर्ति का ध्यान रखा जाता था। घरों का गंदा पानी नालियों के माध्यम से बाहर जाता था और ढकी हुई नालियों की व्यवस्था स्वच्छता की विकसित समझ दिखाती है। सार्वजनिक महाकुंड का सुव्यवस्थित निर्माण, उसमें उतरने की सीढ़ियाँ और पानी की व्यवस्था सामूहिक उपयोग के लिए की गई योजना के उदाहरण हैं। बड़े सार्वजनिक निर्माण तथा आवासीय क्षेत्रों का विन्यास भी नगर के विभिन्न प्रयोजनों का संकेत देता है। जल और स्वच्छता जैसी दैनिक आवश्यकताओं को वास्तु-योजना का अंग बनाया गया था।

चरण 3: निष्कर्ष सुव्यवस्थित सड़कें, सुनियोजित घर, कुएँ, ढकी नालियाँ और सार्वजनिक महाकुंड सिद्ध करते हैं कि मुअनजो-दड़ो विकसित नागरिक सुविधाओं वाला नियोजित शहर था।

त्वरित सुझाव: नियोजित शहर के उत्तर को सड़क, आवास, जल और स्वच्छता के चार ठोस उदाहरणों से व्यवस्थित कीजिए।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

ऐन फ्रेंक समाज में नारी के किस रूप का समर्थन करती है, क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक स्त्री और पुरुष की समान मानवीय गरिमा तथा अधिकारों का समर्थन करती है।
- मातृत्व स्त्री की महत्त्वपूर्ण क्षमता है, लेकिन उसका व्यक्तित्व केवल उसी भूमिका तक सीमित नहीं किया जा सकता।

चरण 1: नारी का समर्थित रूप ऐन फ्रैंक ऐसी स्वतंत्र, शिक्षित और आत्मसम्मानपूर्ण नारी का समर्थन करती है जिसे समाज में पुरुष के समान सम्मान और अवसर मिलें। वह स्त्री को केवल घरेलू काम करने वाली अथवा संतान को जन्म देने वाली मानने का विरोध करती है। स्त्रियों की योग्यता और श्रम को मान्यता मिलनी चाहिए।

चरण 2: समर्थन के कारण ऐन के अनुसार स्त्री प्रसव की पीड़ा सहकर मानव-जीवन को आगे बढ़ाती है, फिर भी समाज प्रायः उसके योगदान का उचित सम्मान नहीं करता। लंबे समय तक पुरुष-प्रधान व्यवस्था ने स्त्री को कम अधिकार दिए। इसलिए ऐन चाहती है कि स्त्रियाँ अपनी क्षमता पहचानें, शिक्षा प्राप्त करें और समाज में बराबरी का स्थान पाएँ।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन स्वतंत्र और समान अधिकारों वाली सम्मानित नारी का समर्थन करती है, क्योंकि मातृत्व और सामाजिक जीवन में उसके अमूल्य योगदान के बावजूद उसके साथ असमान व्यवहार होता रहा है।

त्वरित सुझाव: नारी के समर्थित रूप के साथ समानता की आवश्यकता और मातृत्व के प्रति सम्मान का कारण भी लिखिए।

13(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

कैसे कहा जा सकता है कि सिंधु-सभ्यता में अनुशासन का महत्त्व था, ताकत का नहीं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता के चरित्र का अनुमान उसके सार्वजनिक निर्माण, नागरिक व्यवस्था और उपलब्ध पुरातात्त्विक प्रमाणों से लगाया जाता है।
- सिंधु सभ्यता में सामूहिक सुविधा तथा सुव्यवस्था का महत्त्व शक्ति के दिखावे से अधिक दिखाई देता है।

चरण 1: नागरिक अनुशासन के प्रमाण सिंधु सभ्यता की नियमित सड़कें, व्यवस्थित घर, जल-निकासी और सार्वजनिक स्नानागार बताते हैं कि नागरिक साझा नियमों का पालन करते थे। पकी ईंटों के माप और निर्माण की सुव्यवस्था में भी एकरूपता मिलती है। इतने बड़े नगर का स्वच्छ और व्यवस्थित संचालन नागरिक सहयोग तथा अनुशासन के बिना संभव नहीं था।

चरण 2: ताकत के प्रदर्शन का अभाव यहाँ मिस्र जैसी विशाल राजसमाधियाँ और राजसत्ता का वैभव दिखाने वाले भव्य महल प्रमुख रूप में नहीं मिलते। उपलब्ध अवशेषों में हथियारों और युद्ध के प्रदर्शन की अपेक्षा रोजमर्रा के उपयोग की वस्तुएँ, कला और नागरिक सुविधाएँ अधिक ध्यान खींचती हैं। इससे लेखक ऐसी संस्कृति की कल्पना करता है जिसका आधार सामूहिक व्यवस्था था।

चरण 3: निष्कर्ष नागरिक सुविधाओं की सुव्यवस्था और राजकीय शक्ति के भव्य प्रदर्शन का अभाव संकेत देते हैं कि सिंधु सभ्यता में अनुशासन को ताकत की अपेक्षा अधिक महत्त्व दिया गया था।

त्वरित सुझाव: अनुशासन के लिए नगर-व्यवस्था और ताकत के अभाव के लिए महल, समाधि तथा युद्ध-प्रदर्शन के प्रमाणों को जोड़िए।

13(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

उदाहरणों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढलने में पूरी तरह सफल महिला है । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बदलते समय के साथ ढलने का अर्थ नई पीढ़ी के व्यवहार और जीवन-शैली को सहजता से अपनाना है।
- यशोधर बाबू की पत्नी की परिवर्तनशीलता उनके पति के पुराने संस्कारों से चिपके रहने के विपरीत सामने आती है।

चरण 1: आधुनिक जीवन-शैली की स्वीकृति यशोधर बाबू की पत्नी पहनावे और रहन-सहन में नए समय के अनुरूप परिवर्तन अपना लेती है। वह बच्चों की आधुनिक जीवन-दृष्टि को पति की तरह लगातार संदेह की दृष्टि से नहीं देखती। बच्चों की उन्नति और सुविधाओं में उसे प्रसन्नता होती है; इसलिए परिवार के नए वातावरण के साथ उसका मेल बना रहता है।

चरण 2: वर्षगाँठ के आयोजन में सहभागिता बच्चों द्वारा माता-पिता की सिल्वर वैडिंग मनाने की योजना में पत्नी सहज भाव से शामिल होती है। पति को ऐसा आयोजन अपने पुराने संस्कारों से अलग लगता है, पर पत्नी बच्चों के उत्साह और उत्सव के ढंग को स्वीकार करती है। समय के साथ उसके आचार और व्यवहार में आया बदलाव दिखाता है कि वह अतीत के आग्रह को वर्तमान की खुशी में बाधा नहीं बनने देती।

चरण 3: निष्कर्ष आधुनिक रहन-सहन स्वीकार करने, बच्चों की उन्नति से प्रसन्न होने और सिल्वर वैडिंग के आयोजन में साथ देने के कारण यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ सफलतापूर्वक ढल जाती है।

त्वरित सुझाव: पत्नी के अनुकूलन को केवल सामान्य कथन में न छोड़ें; रहन-सहन और सिल्वर वैडिंग के आयोजन का उदाहरण दीजिए।

14. "जूझ' कहानी उभरते किशोर-समाज को प्रेरणा देने वाली एक सफल कहानी है' – इस कथन के आलोक में 'जूझ' कहानी के उन जीवन-मूल्यों की विवेचना कीजिए जो किशोर-किशोरियों के लिए प्रेरक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक कहानी 'जूझ' में शिक्षा पाने के लिए संघर्ष करता किशोर अपने श्रम, संकल्प और संवेदनशीलता से व्यक्तित्व का विकास करता है।
- कहानी के जीवन-मूल्य लेखक के पारिवारिक संघर्ष, विद्यालय के अनुभव और कविता के प्रति जागते अनुराग से सामने आते हैं।

चरण 1: शिक्षा के प्रति लगन और कठिनाइयों से संघर्ष कहानी का किशोर पढ़ना चाहता है, जबकि उसके पिता उसे खेत के काम में लगाए रखना चाहते हैं। घर की प्रतिकूल परिस्थितियों से वह शिक्षा की इच्छा नहीं छोड़ता। माँ और दत्ता जी राव की सहायता से उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर मिलता है। यह प्रसंग किशोरों को सिखाता है कि अपने भविष्य के लिए उचित लक्ष्य चुनकर धैर्य और समझदारी से प्रयास करना चाहिए। शिक्षा उसके लिए नौकरी का साधन मात्र नहीं, अभाव और अज्ञान से बाहर निकलने का मार्ग है।

चरण 2: श्रमशीलता, आत्मसम्मान और सहयोग का महत्त्व पढ़ाई की अनुमति मिलने पर भी खेत और घर का काम उसकी जिम्मेदारी बना रहता है। वह श्रम से बचने के बजाय उसके साथ अध्ययन का संतुलन बनाता है। विद्यालय में अपनी ग्रामीण वेशभूषा और साथियों के व्यवहार से होने वाली झिझक के बावजूद वह पढ़ाई जारी रखता है। उसका प्रयास बताता है कि आर्थिक स्थिति या बाहरी रूप किसी की योग्यता का अंतिम मापदंड नहीं है। माँ, दत्ता जी राव और शिक्षकों की सहायता यह भी दिखाती है कि व्यक्ति की उन्नति में सहानुभूति और सही मार्गदर्शन की बड़ी भूमिका होती है।

चरण 3: सृजनशीलता, गुरु के प्रति आदर और आत्मविश्वास न. वा. सौंदलगेकर कविता को भावपूर्ण ढंग से पढ़ाते हैं। उनके पाठ और प्रोत्साहन से किशोर के भीतर कविता के सौंदर्य की पहचान तथा स्वयं लिखने की इच्छा पैदा होती है। वह आसपास के जीवन और प्रकृति को ध्यान से देखने लगता है। खेत का एकाकी श्रम भी उसके लिए कविता दोहराने और रचने का अवसर बन जाता है। इस तरह वह कठिन परिस्थितियों में भी अपनी प्रतिभा का विकास करता है। शिक्षक के मार्गदर्शन को स्वीकार करना, नियमित अभ्यास करना और अपनी क्षमता पर विश्वास रखना किशोरों के लिए विशेष रूप से प्रेरक मूल्य हैं।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' संघर्षशील किशोर के माध्यम से शिक्षा-प्रेम, परिश्रम, धैर्य, आत्मसम्मान, सहयोग और सृजनशीलता का संदेश देती है। नायक परिस्थितियों के बीच अपना मार्ग बनाता है। इसी कारण कहानी किशोर-किशोरियों को लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध रहकर अपनी संभावनाएँ विकसित करने की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: जीवन-मूल्य लिखते समय हर मूल्य को कहानी के किसी ठोस प्रसंग से जोड़ें; केवल गुणों की सूची देने से विवेचना पूरी नहीं होती।

अथवा

14. 'ऐन फ्रेंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय के अनुभवों की कहानी है' – इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो द्वितीय विश्व युद्ध में छिन्न-भिन्न हो गए थे । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'डायरी के पन्ने' में ऐन फ्रैंक के निजी अनुभव नाजी उत्पीड़न और द्वितीय विश्व युद्ध की अमानवीयता का साक्ष्य बनते हैं।
- युद्ध की त्रासदी को समझते समय जीवन की सुरक्षा, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा और बालमन के सहज विकास जैसे मूल्यों के विनाश पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: जीवन की सुरक्षा और मानवीय गरिमा का हनन ऐन फ्रैंक की डायरी युद्ध को केवल देशों की लड़ाई के रूप में नहीं दिखाती; वह निर्दोष लोगों के जीवन में उतरे भय और असुरक्षा को सामने लाती है। यहूदियों को पकड़कर ले जाया जाता था और परिवारों को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए छिपना पड़ता था। मनुष्य का जीवन सम्मान और सुरक्षा का अधिकारी है, किंतु नाजी व्यवस्था ने इसी मूल

अधिकार को कुचल दिया। ऐन और उसके साथ छिपे लोगों का लगातार पकड़े जाने के डर में रहना इस अमानवीय स्थिति का मार्मिक प्रमाण है।

चरण 2: समानता, सहिष्णुता और स्वतंत्रता का विनाश यहूदियों के प्रति नस्ली घृणा ने मनुष्य की पहचान को उसकी जातीय पृष्ठभूमि तक सीमित कर दिया। उनके आवागमन, शिक्षा और सामान्य सामाजिक जीवन पर प्रतिबंध लगाए गए। इससे समानता तथा धार्मिक और सामाजिक सहिष्णुता नष्ट हुई। गुप्त आवास में रहने वालों को अपने ही दैनिक व्यवहार पर कड़ा नियंत्रण रखना पड़ता था। वे खुलकर बाहर नहीं जा सकते थे और सामान्य जीवन की सहज स्वतंत्रता से वंचित थे। डायरी बताती है कि भेदभाव जब शासन की नीति बन जाता है, तब स्वतंत्रता और गरिमा दोनों संकट में पड़ जाते हैं।

चरण 3: पारिवारिक सुख, बचपन और मानवीय संबंधों पर आघात युद्ध ने परिवारों को बिखेरा और परिचितों से मिलने-जुलने का सहज जीवन छीन लिया। ऐन जैसी किशोरी को मित्रों, विद्यालय और बाहर की दुनिया से दूर बंद वातावरण में रहना पड़ा। बचपन की निर्भयता, खेल और स्वाभाविक विकास के अवसर बाधित हुए। तंग जगह, संसाधनों की कमी और निरंतर तनाव से आपसी संबंधों में भी खीझ और टकराव पैदा होते थे। इस तरह युद्ध ने प्रेम, विश्वास, सहयोग और मानसिक शांति को भी चोट पहुँचाई। फिर भी छिपे लोगों की सहायता करने वाले व्यक्तियों में करुणा और साहस का बचा रहना मानवीयता की आशा को जीवित रखता है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रैंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय की जीवंत गवाही है। उसमें जीवन की सुरक्षा, समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, पारिवारिक सुख और बचपन की सहजता का विघटन दिखाई देता है। एक किशोरी की दृष्टि से व्यक्त ये अनुभव युद्ध और नस्ली घृणा के विरुद्ध शांति, करुणा तथा मनुष्य के सम्मान की रक्षा का संदेश देते हैं।

त्वरित सुझाव: हर जीवन-मूल्य के साथ डायरी की एक स्थिति जोड़ें, जैसे छिपकर रहना और स्वतंत्रता का हनन; केवल युद्ध की घटनाएँ गिनाना पर्याप्त नहीं है।